।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

अप्रैल 2026

वर्ष : 03 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 01

सुरभि उवाच

हे लक्ष्मी–पुत्रों! हे मेरे प्रिय वैश्य वंशजों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

हे मेरे प्रिय पुत्रों! मैं समस्त गोवंश की आदि–जननी 'सुरभि' तुम्हें आज कुछ कहना चाहती हूँ। जिन्होंने युगों–युगों से समाज की आर्थिक और आध्यात्मिक नींव को अपने दूध और घी से सींचा है, अपने कन्धे से अन्न पैदा करके दिया है, वो ही मेरा वंश आज भूख–प्यास से बिलख रहा है, निष्ठुर कसाइयों के हाथों मारा जा रहा है, अपनी क्षुधा तृप्ति के लिये विवश होकर अखाद्य वस्तुएं खाकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! प्राचीन काल में जब प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की, तब उन्होंने तुम्हें मेरी रक्षा और पोषण का विशेष दायित्व सौंपा था। तुम्हारे पूर्वजों ने कृषि–गोरक्ष–वाणिज्यं के मंत्र को जीया था, जहाँ व्यापार की सफलता का पैमाना तिजोरियाँ नहीं, बल्कि आंगन में बँधी स्वस्थ गायें थीं। आज मैं देख रही हूँ कि तुम्हारे व्यापार की सीमाएं तो सात समुद्र पार पहुँच गई हैं, पर तुम्हारे हृदय के आंगन से मेरी संतानों (गोवंश) का स्थान घटता जा रहा है।

हे महाजनों! मेरी संतानें आज सड़कों पर कूड़ा खाने और तिरस्कार सहने को विवश है, क्या एक वैभवशाली समाज के लिए यह शोभा देता है? याद करो, तुम्हारे 'अग्रवाल', 'माहेश्वरी', 'खंडेलवाल' जैसे गौरवशाली कुलों का उदय ही मेरी सेवा और करुणा के धरातल पर हुआ था। तुम्हारी व्यापारिक बुद्धि विश्व में सर्वश्रेष्ठ है(क्या तुम उस बुद्धि का उपयोग मेरी संतानों को आत्मनिर्भर और सुरक्षित बनाने में नहीं कर सकते?

हे मेरे पुत्रों! मुझे तुमसे केवल घास की गठरी या कुछ सिक्कों का दान नहीं चाहिए मेरे वंश को तुम्हारा वह अपनत्व और संरक्षण चाहिए जो एक पुत्र अपनी माता को देता है। अपनी व्यापारिक कुशलता से ऐसी गोशालाएं बनाओ जो आधुनिक हों, जहाँ मेरी संतानों को कचरे के ढेर में नहीं, बल्कि सम्मानजनक आश्रय स्थान मिले।

हे वैश्य पुत्रों! जब तुम अपने लाभ का एक अंश मेरी रक्षा में लगाओगे, तो वह केवल दान नहीं, बल्कि तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और संस्कार में एक अक्षय निवेश होगा।

हे वैश्यों! उठो और पुनः उस गोपाल के सखा बनो, जिसने लाठी उठाकर मेरी संतानों के लिए पहाड़ उठा लिया था। यदि तुम मेरी रक्षा का संकल्प लोगे, तो मैं वचन देती हूँ कि तुम्हारे घरों में ऋद्धि–सिद्धि और सुख–शांति का वास सदैव बना रहेगा।

पुत्रों! मेरी पुकार सुनो– अपने मूल धर्म गोरक्षा की ओर लौटो, क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा वंश अकेला हो गया है और गो के बिना तुम्हारी लक्ष्मी अधूरी है।

एक बार पुनः आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

तुम्हारी प्यारी मां सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:3

कामधेनु-कल्याण

अंक:1

चैत्र मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2083 रा.शाः 1948 अप्रेल –2026

1. **गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 04
2. **प्रार्थना क्या है** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 07
3. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 10
4. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 11
5. **ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से 14
6. **वैश्य के स्वाभाविक कर्म** – परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज 17
7. **श्री मदभागवत कथा** – पूज्य द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 18
8. **विभिन्न सनातन धर्मशास्त्रों में गोमहिमा** – संकलित 21
9. **श्री राम कथा** – पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 22
10. **श्री शिव महापुराण कथा** – पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 25
11. **श्री कामधेनु महाशक्तिपीठ** – वेदलक्षणा गोमहिमा सत्संग से साभार 28
12. **अन्नदान महादान** – अम्बा लाल सुथार सम्पादक 30
13. **नंदिनी** – संकलित 31
14. **संस्था समाचार** – मार्च माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(सुरभि संसद दिनांक 16.01.2026 में प्रदान किया गया आशीर्वाद)

.... पिछले अंक से आगे

सन् 2000 से 2003 तक चार वर्ष तक राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और तेलंगाना आदि राज्यों के बड़े भाग में ऐसे दुष्काल थे उसका अगर आप स्मरण करें और जिस तरह से अंधाधुंध तरीके से गोवंश की हत्या हो रही थी 1999 से पहले उस सबकी कल्पना करें तो आज हमारे पास में 12 करोड़ की जगह शायद एक-दो करोड़ गोवंश भी बचा होना मुश्किल था। तो 12 करोड़ गोवंश हमारी भारत की धर्म धरा पर जीवित है इसके पीछे श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा रूपी संतों का जो सत् संकल्प है और भगवान की प्रेरणा है वही कारण है।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के प्रेरक सदैव भगवान स्वयं हैं और इसकी सेवा के जो सद्भाव में संकल्प कर्ता है वे संत है। उनमें से अनेक संत गोलोक चले गए हैं, पर उनका वह सत् संकल्प आज भी हम लोगों के साथ है। परम श्रद्धेय स्वामी रामसुखदास जी महाराज ने श्री श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा को अपनी अंतरात्मा से सींचा है और भी संतों के अनेक ऐसे नाम हैं जिनका नाम स्मरण कर सकता हूँ जो 1993 में विराजमान थे आज नहीं है और बहुत से ऐसे थे जो 50 साल, 100 साल पहले वे गोलोक सीधार गए थे और उनका गोसेवा रूपी सत्संकल्प हमारे साथ था और अभी साथ है उसी के कारण यह व्यापक रूप से कार्य हुआ है। अनेक प्रदेशों में गोवध बंदी का कानून बना। एक बहुत बड़ी चीज है राजस्थान जैसे प्रदेश में स्वतंत्र गोपालन मंत्रालय का गठन होना। मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड आदि प्रदेशों में गरीब गोपालकों द्वारा निराश्रित छोड़े गए अथवा कसाइयों के हाथ में हाथों से मुक्त कराए गोवंश के लिए राज्यकोष से गोग्रास देने का नियम बनना यह कोई सामान्य बात नहीं थी। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में यह कार्य कठिन था, कल्पना में नहीं था। 2008 में जब हमने यह बात कही थी, उसमें आज बहुत सारे लोग विराजमान हैं तो सब लोग कह रहे थे कि यह हो ही नहीं सकता तो ऐसी बात क्यों कह रहे हैं? हमने कहा हम अपनी ओर से नहीं कह रहे हैं, जो गोमाता कहलवा रही है और वो होगा। रामा नहीं करेगा तो खेमा करेगा, खेमा नहीं तो भगवाना करेगा, भगवाना नहीं तो धर्मा करेगा लेकिन यह काम तो होगा और आप देखें 2013 में इस कार्य का शुभारंभ हुआ।

राजकोष से गोग्रास देना वो राज्य प्रशासन या वो शासक जो गोहत्या के लिए परमिशन देता है, गोहत्यारों को प्रोत्साहन देता था, गोहत्यारों के पक्ष में खड़ा था, वही कानून गोवंश को गोग्रास देने लगा। बहुत बड़ी बात है, बहुत बड़ी घटना है इस धरती की और शायद भारत की पुनः समृद्धि और भारत के उत्थान का जो स्वरूप देख रहे हैं अभी हम पिछले एक्सीडेंट से उसके मूल में यह गोमाता को दिये गये गोग्रास का पुण्य ही है। भारत की समाज या भारत के शासक इस बात को समझे या ना समझे उनकी मर्जी। अगर समझेंगे तो वे राष्ट्र को और ऊपर ले जाएंगे और नहीं समझेंगे तो स्वयं का तो पतन होगा ही होगा पर जो जिम्मेवारियों उनको दी हुई है, उनके पीछे लगा हुआ जो समाज है, उसको भी वे गलत दिशा में ले जायेंगे।

हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भारत के प्रांतों में तथा केंद्र में जहाँ-जहाँ अभी तक गाय के पक्ष में कानून नहीं बना और जहाँ कानून बन चुका

है पर वह ठीक तरह से क्रियान्वित नहीं हो रहा है, वह दोनों तरह से- कानून बने हुए राज्यों में ठीक तरह से क्रियान्वती हो ताकि किसी भी तरह का एक भी गोवंश भूखा प्यासा सड़कों पर न भटके, कूड़ा-कचरा न खाए, क्रूर कसाइयों के हाथ न जाए, वह आदर सहित आश्रय और आहार प्राप्त करे ऐसी व्यवस्था बने और जहाँ कानून नहीं बना वहाँ गाय के पक्ष में कानून बने।

देश में जहाँ-जहाँ गोरक्षा के लिए जो-जो संस्थाएं, व्यक्ति काम कर रहे हैं किसी भी तरह से गोरक्षा का कानून बनाने का, गो को सम्मान दिलाने का, गो को आश्रय दिलाने का उन सबके पक्ष में, उन सबके समर्थन में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा पहले भी खड़ा रहा है, अभी है और आगे भी खड़ा रहेगा। गोसेवा में लगी हुई संस्थाओं को, समूहों को, संगठनों को और व्यक्तियों को श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा आर्थिक, नैतिक और सामाजिक समर्थन करता रहेगा। वे कोई भी क्यों न हो, किसी भी पंथ के व्यक्ति हो, संस्थाएं हो, संगठन हो उन सबको तीनों तरह का सहयोग बिना किसी भय और लालच के यह संस्था सहयोग करेगी, संस्था की यह वचन बद्धता है और इसी के लिए संस्था का गठन हुआ है।

देश में जहाँ कहीं भी वेदलक्षणा गोवंश के संरक्षण, संप्रोषण, सम्मान, संवर्धन और पंचगव्य के विनियोग हेतु कार्य हो रहा है या जो लोग कार्य कर रहे हैं वह निश्चिन्त और निर्भिक होकर कार्य करें उनके सिर पर आदिशक्ति सुरभि गोमाता और उनके अपने घर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का वृहद हाथ है। इस संस्था की स्थापना के समय यह निश्चित किया गया था कि कोई भी व्यक्ति, पंथ, संगठन या समाज इसका श्रेय नहीं लेगा। क्योंकि यह कार्य भगवान का है, इसके पीछे भगवान ही है। इसलिए आज भी हम लोग उसी नियम पर चलते हैं कि ये श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का कार्य किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है, किसी समूह विशेष का नहीं है, भगवदीय कार्य है। इसी तरह यह सब बनाये रखें। इसे किसी क्षेत्रीय सीमाओं में या किसी भी संक्षिप्त सीमा में यह संस्था और संस्था के उद्देश्य बंधे हुए नहीं है। व्यापक रूप से संपूर्ण भारत वर्ष में और धरती पर जहाँ वेदलक्षणा गोवंश विद्यमान है, उनके संरक्षण, संप्रोषण, संवर्धन और उनके द्वारा प्राप्त पंचगव्यों के विनियोग इन चारों चरणों के द्वारा गोमाता की महिमा को स्थापित करना ही इस संस्थान का उद्देश्य है।

इस समय संस्थान के पदेन प्रधान संरक्षक गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज है और वे आप सबके वात्सल्य से और सहयोग से ही कार्य कर पाएंगे। अतः पूज्य संतों से और गोभक्त कार्यकर्ताओं से हमारा अनुरोध है कि वे इनको अपनाएं, इनको सहयोग करें, इनका साथ दें, इन्हें प्रोत्साहित करें। ये संकोच कर रहे हैं। कथाओं में, आयोजनों में, स्पष्ट रूप से इस अभियान के बारे में बोल भी नहीं पा रहे हैं। इनको संकोच हो रहा है। आप अगर पूरा साथ दोगे तो ये खुलकर बोलेंगे क्योंकि यह भगवान का कार्य है।

स्वामी रामसुखदास जी महाराज जैसे गीता प्रेस की बात हर सत्संग में करते थे, पुस्तकों के प्रचार की बात, पुस्तकों के अध्ययन की बात जन-जन को कहते थे और अंतिम वर्षो में तो उन्होंने श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के लिए भी कहा। जिस तरह से स्वामी रामसुखदासजी महाराज गीताप्रेस की पुस्तकों का प्रसार करते थे उसी तरह से हम अपेक्षा करते हैं कि आत्मीय गोवत्य श्री राधाकृष्ण जी महाराज भी श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रायोजित इस गोसेवा महाअभियान के लिए जन-जन का आह्वान करें जन-जन को अपील करें और जन-जन को जोड़ें। उसमें कोई संकोच न रखें, बिना संकोच, इसमें संकोच और लज्जा दोनों का त्याग करके लोगों का आह्वान करें और करेंगे ऐसा मुझे विश्वास है।

सज्जनों! गत दिनों आप सबसे पांच विषयों

पर सुझाव और मार्गदर्शन मांगा था कि-

1. श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के उद्देश्यों के अनुरूप गोवंश की सेवा कैसे हो?

2. श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की गोशाला में विराजमान गोवंश के लिए गुणवत्ता युक्त चारा पोष्टिक आहार की समय पर नियमित रूप से आपूर्ति कैसे हो

3. राजस्थान सहित पूरे भारत वर्ष में पिछले कुछ दशकों से वेदलक्षणा गो नस्लों का जो ह्रास हुआ है उसे कैसे रोके और उनके संवर्धन के लिए क्या-क्या उपाय करें?

4. चौथा था कि भाई श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रायोजित रचनात्मक गोसेवा अभियान के परिणाम स्वरूप गाय का दूध घी आदि का तो महत्व बढ़ गया और उसका मूल्य भी मिल रहा है परंतु गोमय और गोमूत्र की जिस तरह की विशेषताएं है उस हिसाब से काम नहीं हो रहा है उसके लिये भी सबसे सुझाव मांगे थे।

5. गोमहिमा के प्रचार-प्रसार के लिए क्या-क्या कार्यक्रम करने चाहिए कहाँ-कहाँ करने चाहिए? ऐसे ये पांच बिंदुओं पर आपसे मार्गदर्शन और सुझाव मांगे थे। कुछ बंधुओं ने अपने सुझाव दिए भी हैं।

सज्जनों! एक विचित्र स्थिति गोभक्तों के मन में आज भी है कि सरकार के सहयोग करने के बाद, हम लोगों के द्वारा इतना सहयोग करने के बाद भी बहुत सारा गोवंश सड़कों पर घूम रहा है, प्रतिवर्ष गोशालाओं को चारा चाहिए उसके लिए आर्थिक सहयोग चाहिए, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा को ही करोड़ों रुपयों की आवश्यकता रह रही है। हम आपको ह्दय से आश्वासन देते हुए (आवश्यक नहीं है कि आप मेरा आश्वासन मान लोगे और ऐसा मैं अपने में कोई योग्यता और सामर्थ्य भी नहीं मानता हूँ) भगवान की ओर से बोलते हैं, गाय की ओर से बोलते हैं कि 10 वर्षो से पहले-पहले (यह बात हमने आपको पहले 1999 में 50 साल की कही थी, अब केवल 10 वर्ष का कह रहे हैं) गाय उस स्थिति में पहुँच जाएगी कि गायों को आपको कुछ देना नहीं पड़ेगा, गाएं आपको देगी। आज दूधवाली का हिसाब भी आपने देखा, डेढ़ लाख गायों में केवल 800 गाएं दूध देती है, शेष सभी गाएं बिना दूधवाली हैं लेकिन गोमय और गोमूत्र तो सभी गाएं देती है। गोमूत्र का संकलन करना थोड़ा कठिन हैं, पर गोमय को तो सभी इकट्ठा करते ही हैं।

तो अभी जो एक वातावरण दुनिया में बन रहा है, एक जागृति आ रही है कि मनुष्य से बहुत बड़ी भूल हो गई कि धरती को विषैला बना दिया, अगर जीना है तो धरती को विष मुक्त करना होगा। तो उसके लिए लोगों में एक जागृति आ रही है और गोमय के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। अभी कोई संस्था के लोग आए थे वे कह रहे थे कि हमको 50 हजार टन गाय का गोमय प्रतिवर्ष चाहिए तो क्या पथमेड़ा अनुबंध कर सकता है, हम दो रुपया किलो का भाव देंगे। तो हमने कहा भाई इससे तो कुछ होगा नहीं। हम अगर थोड़ा धैर्य रखेंगे तो यह भाव तो और बढ़ेगा। कम से कम गोमाता के ऊपर जो खर्चा आ रहा है उतना नहीं तो उसका आधा तो गोमय से मिलना ही चाहिए और यह जल्दी ही शुरू हो जाएगा, ज्यादा देरी नहीं लगेगी।

वेदलक्षणा गोमाता हमारी धरती को विषमुक्त और जीवनी शक्ति से भरपूर बनाती है, मानव जाति सहित सभी जीवों को वास्तविक जीवन प्रदान करती है। मानव इतिहास से पता चलता है कि गोमाता जीवनी शक्तियों का अक्षय स्त्रोत है। मानवीय चेतना के विकास और उत्थान का आधार भी गोमाता है। गोमाता के वात्सल्य से धरती का पोषण, प्रकृति का संवर्धन, पर्यावरण का परिशोधन और सनातन संस्कृति का सींचन होता है। यह बात सत्य है धनु संरक्षण, धरती पोषण, प्रकृति संवर्धन पर्यावरण का शोधन और सनातन संस्कृति का सींचन एक ही कार्य से, गो की रक्षा से चारों कार्य एक साथ होते हैं। हमारी धरती पर वेदलक्षणा गोमाता ...शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है ?

पिछले अंक से आगे......उनसे हमने क्या प्रार्थना की? हम सब एक हैं, सारी सृष्टि एक है, सबके साथ एकता की बात रखकर दु:खी प्राणियों में त्याग के बल की प्रार्थना की। दु:खियों में त्याग का बल आ जाए। इसमें यह नहीं कहा गया कि आपके विधान के अनुसार जो हमारे जीवन में दु:ख है वह चला जाए। दु:ख भले ही बना रहे, उसके साथ त्याग का बल आ जाए। त्याग का बल आने से आया हुआ जो दु:ख है वह निर्जीव हो जाता है अथवा यूं कहें कि दु:ख जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आया है, त्याग आने से वह उद्देश्य पूरा हो जाएगा। दु:ख किस उद्देश्य से आया है हमारे सामने? सुख की दासता से मुक्त होने के लिए दु:ख आया है अथवा सुख की लालसा का नाश करने के लिए दु:ख आया है। हमारे कहने का तात्पर्य है कि दु:ख में त्याग के बल की आवश्यकता है। इस दृष्टि से हम सबको दु:ख में त्याग के बल की प्रार्थना करनी चाहिए। दु:खकाल में त्याग ही वास्तविक साधन है। त्याग के बिना दु:ख का सदुपयोग हो नहीं सकता।

यह नियम है कि जिसका सदुपयोग हो जाता है वह वस्तु अपने आप समाप्त हो जाती है। अगर दु:ख का सदुपयोग होगा तो दु:ख सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। दु:ख का सदुपयोग करने पर दु:ख अपने आप नष्ट हो जाता है। इतना अवश्य है कि आपको भूख लगी है लेकिन यदि आप में भोजन की कामना को त्यागने का बल है तो भूख आपको क्षोभित नहीं कर सकती। जब आप क्षोभित नहीं होते तब आप क्रोधित भी नहीं होते। जब आप क्रोधित नहीं होते तब आपको विस्मृति भी नहीं होती। विस्मृति किसकी? सत्संग की विस्मृति, भगवान की विस्मृति, अपने प्रभु की विस्मृति, अपने स्वरूप की विस्मृति, अपने प्रेमास्पद की विस्मृति नहीं होती। किसको? जो कभी क्रोधित नहीं होता है वह अपने इष्ट को, अपने प्रभु को कभी भूलता नहीं है, वह कभी भूलता नहीं है। इसलिए भाई हम सबको क्रोधित नहीं होना है। हमको क्रोध रहित होने के लिए हमें क्षोभित नहीं होना है। क्षोभित नहीं होने के लिए दु:ख के भय से मुक्त होना है। दु:ख के भय से मुक्त होने के लिए दु:ख में त्याग के बल की आवश्यकता हैं। इस दृष्टि से मानना पड़ेगा कि दु:खी का साधन त्याग है, दु:खी का कर्तव्य त्याग है। दु:खी को त्याग अपनाना ही है। इस दृष्टि से हम सब जब दु:ख में त्याग को अपना लेंगे तो दु:ख का भय सदा के लिये चला जायेगा।

अब रही सुख की दासता। सुख का त्याग नहीं हो सकता। सुख ऐसी प्रिय वस्तु है, उसके त्याग की बात कहना अपने आप को धोखा देना है। परंतु भाई अगर सुखकाल में सेवा का बल आ जाए तो सेवक के लिए सुख का त्याग करना बहुत ही स्वाभाविक हो जाता है। हम बड़ाई नहीं करते, पर एक उदाहरण देते हैं। हमारे बीच में एक ऐसे सज्जन विराजे हैं वे एक उदाहरण ही है कि वह अपने शरीर की सुविधा के लिए बहुत कम संसाधनों का उपयोग करते हैं। हमने उनको कहा वृद्ध हो गए हैं, आप गाड़ी रखिए एक ड्राइवर रखिए तो उनके मन में यह भाव रहता है कि गाड़ी रखेंगे, ड्राइवर रखेंगे तो उसमें इतना पैसा खर्च होगा, वह पैसा गोसेवा में लगा दिया जाए। क्यों? क्योंकि गायों को खूब आवश्यकता है। वे बहुत समय तक तो स्कूटर लेकर आते थे, जबकि

ऐसा समय भी आया है उन्होंने एक-एक वर्ष में सवाल से डेढ़ करोड़ रूपया का चारा गायों को डाला और अपने लिए स्कूटर लेकर आते, ड्राईवर नहीं रखा। हम उनका परिचय कराकर उनके पुण्य को घटना नहीं चाहते।

तो हम निवेदन कर रहे थे कि जब हमारे अंदर दूसरों को सुख पहुँचाने का भाव आ जाता है, सेवाभाव तो सेवक के लिए अपना सुख त्यागना सरल हो जाता है। वह जिसको सुख पहुँचाना चाहता है उसके लिए वह अपने सुखों का त्याग सरलता पूर्वक कर सकता है। हमारे साथी हैं कई तो वे ठंडी में 4.00 बजे गायों के बीच में जाते हैं। सफाई करते हैं, पानी पिलाते हैं। देखो भाई ठंडी में अपना सुख तो यह है कि आप कमरे में बैठे रहो, ओढ़ के बैठे रहो या सोते रहो, पर वे गोमाता को सुख देने के लिए अपने सुख का त्याग आराम से कर लेते हैं, उनको ऐसा लगता ही नहीं कि हमने अपने सुख का त्याग किया है। गाय को दु:खी देखकर वे सहज में निज सुख की इच्छा का त्याग कर सकते हैं। तो सुखकाल में सेवा का बल मिल जाए तो सुख का त्याग करना स्वाभाविक हो सकता है।

सेवक का हृदय पराए दु:ख से भरा रहता है जैसे कोई गोसेवक है तो उनके हृदय में सच में हर समय गाय की पीड़ा भरी हुई होगी। इसलिये वह सुख नहीं भोग सकता। पराये दु:ख से भरते ही वह अपना प्राप्त सुख बांटने के लिए तत्पर हो जाता है। पिछले वर्ष चातुर्मास के समय एक लंपी की बीमारी आई और वह इतनी खतरनाक बीमारी थी कि जिससे हजारों गाएं उससे तड़प-तड़प कर पधार गई। उनके घाव पड़ गए, उनका मांस पिघलने लग गया, कोई दवाई लागू नहीं हो रही थी। हम लोग बहुत परेशान हो गए। कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। कई साथियों को नींद आवे नहीं, भूख लगे नहीं, सत्संग की भी बातें होती तो यही होती पर करें तो क्या करें। तो आप आश्चर्य करेंगे, उस समय अनेक लोगों के मन में ऐसा था कि जो कुछ हमारे पास है वह सब लग जाए पर गोमाता का दु:ख मिटे। हमारे साथी जो अभी यहाँ नहीं हैं गोवत्स राधाकृष्ण जी आए कक्ष में। राधाकृष्ण जी को तो आप जानते ही हैं। बहुत अच्छी कथा करते हैं। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के कार्यकारी प्रधान संरक्षक भी हैं। वे आए और बोले कि महाराज जी हमारे जीवन को जहाँ भी लगाना हो वहाँ लगा दीजिए और उसके बदले में गायों की बीमारी मिट जाए, ऐसी कोई औषधि मंगा लीजिए। हमने कहा भैया अपने को कौन ले बाबाओं को, कोई दूसरा होता तो लोगों के काम आता। अपने को तो ले जाए तो भोजन और करवाना पड़े और बातें सुनने के लिए खोटी और होना पड़े, बैठो इनके पास।

हम लोग ये बातें कर ही रहे थे और हमारे संस्था के अध्यक्ष का फोन आया, उन्होंने हमको आवाज सुनाई तो वे गाय की पीड़ा से भरे हुए थे। उन्होंने हमको कहलवाया कि हमारी जो मिल है वह हम आज ही गिरवी रखवा लेते हैं और जितना भी ध ान है वह सारा का सारा लग जावे और गायों के लिये कोई दवाई मिल जाय। यह क्या है? यह पराये दु:ख से दु:खी होना है। वास्तव में जब पराया दु:ख हृदय में भर जाता है तो जो कुछ अपने पास होता है वह बांटने के लिए वह तैयार हो जाता है। हमने उनको समाचार भिजवाया कि भाई दवाई तो कोई है ही नहीं। अनेक देशों में पुछवाया है, फिर भी हम अमूल डेयरी समूह के लोगों को और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड से जुड़े हुए लोगों को आज शाम को बुलाते हैं, कोई रास्ता निकलता है तो आगे बढ़ेंगे। बुलाया गया, अध्यक्ष महोदय भी हवाई जहाज से पहुँच गए अहमदाबाद। शाम की मीटिंग हुई। उन्होंने कहा कि भाई प्रारंभ में हम 10 करोड़ रुपया देते हैं आप इससे दवाई के अनुसंधान का कार्य प्रारंभ कीजिए। सरकार भले ही न दे हम देते हैं। खैर! औषधियों बनी, प्रयास हुआ पर प्रार्थना

ही काम आई। तो हमारे कहने का भाव यह है कि जब हम पराये दु:ख से भर जाते हैं तो अपने पास जो भी सुख होता है उसको बांटने में हमको कठिनाई नहीं होती है, उल्टा सुख मिलता है कि हमारे पास जो कुछ था उससे आगे वाले का दु:ख मिट गया।

इससे सिद्ध होता है कि सुखकाल में सेवा के बल की आवश्यकता है। सुखी आदमी के हृदय में सेवा का बल आवे तो ही वह सुख का त्याग कर सकता है। इसी अहमदाबाद में सैकड़ों लोग धनी होंगे हमारे अध्यक्ष से भी अधिक संपत्ति होगी उनके पास में, हजारों करोड़ के मालिक होंगे और यह लंपी की बीमारी के दृश्य किसी से छुपे हुए नहीं थे, देश और देश की जनता सब जानते थे। कितने लोग आगे आये कि हम सर्वस्व लगाने को तैयार हैं गोमाता का दु:ख मिटे? उंगलियों पर गिन सकते हैं। कई बच्चे पढ़ाई छोड़कर, दुकान छोड़कर उस समय लगे थे पर जो संख्या है देश की उसके सामने वह बहुत अल्प था।

इसलिए कहा कि 'मनुष्याणां सहस्त्रेषु' हजारों मनुष्यों में कोई एक सोचता है कि सुख और दु:ख से आगे भी कोई जीवन है। जीवन इससे आगे है, यह जीवन है ही नहीं। दु:ख में त्याग का बल और सुख में सेवा का बल, यही प्रभु से मांगा गया है। सुखी आदमी सुख का त्याग नहीं कर सकता और सुखी आदमी सेवा कर सकता है और सेवा करने से सुख की कामनाएं मिअ जाती है, अपना सुख अपने आप बंट जाता है। सेवा का अर्थ यह नहीं है कि आप किसी का दु:ख मिटा सकते हैं, सेवा का अर्थ बस इतना ही है कि आप अपना सुख बांट सकते हैं। सुख बांटने का अर्थ क्या है? सेवक के हृदय में उदारता और करूणा निवास करने लगती है। उदारता भी रहती है करूणा भी रहती है। वह पीड़ित को देखकर करूणित हो जाता है और करूणित होकर उनकी पीड़ा मिटाने के लिये तत्पर हो जाता है।

पराये दु:ख से जब हम दु:खी होते हैं तो हमारा हृदय करूणित हो जाता है और करूणित होने के बाद जो सुख-भोग की रुचि है वह नष्ट हो जाती है। जिस सुख भोग की रुचि ने हमें बांध रखा है वो करूणित होते ही नष्ट हो जाती है। अब सुख भोग की रुचि का नाश होते ही सुख के सदुपयोग करने का सामर्थ्य आ जाता है। सुख का सदुपयोग करते ही सुख की दासता मिट जाती है और सुख की दासता मिटते ही दूसरों का जो सुख है वह हमारा अपना सुख बन जाता है और जो दूसरों का दु:ख है वह हमारा अपना दु:ख बन जाता है। 'पर सुख सुखी, पर दु:ख दु:खी' ये ही संत के लक्षण बताए गये हैं। ये संत के लक्षण, संत हृदय के लक्षण बताएं, सत्पुरुष के, सज्जन पुरुष के लक्षण बताए कि जो दूसरों के दु:ख से दु:खी हो जाता है, दूसरों के सुख से सुखी हो जाता है अर्थात दु:खियों को देखकर करूणित और सुखिया को देखकर प्रसन्न होता है वही सज्जन है, वही संत है, वही साधक है और वही मानव है।

तो भाई दूसरों का जो दु:ख है वह हमारा दु:ख बन जाता है, दूसरों का सुख है वह हमारा सुख बन जाता है। सेवक के हृदय में करुणा और प्रसन्नता निवास करती है। आप देखिए! गंभीरता से विचार कीजिए इस बात पर कि जब आपका हृदय किसी के दु:ख से भर जाता है तब आपके हृदय में करुणा का रस बहने लगता है और जब आप किसी सुखी को देखकर प्रसन्न हो जाते हैं तब आपके जीवन में प्रसन्नता छा जाती है। सच्ची प्रसन्नता सुखियों को देखकर ही मिल सकती है, जो सुख भोगने से नहीं मिलती। सुख भोगने से तो भोगने की शक्ति का ह्रास होता है और भोग्य वस्तु का विनाश होता है। भोग्य वस्तु का विनाश और भोगने की शक्ति का ह्रास यह सुख भोग की बात है, पर जब हम सुखियों को देखकर प्रसन्न होते हैं तो न तो सुख भोगने की शक्ति का ह्रास होता है और न ही भोगने की शक्ति का नाश होता है, अपितु बिना ही भोगे भोग से ....शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गाँव-गाँव हो गोपालन और गोकृषि

....पिछले अंक से आगे

..........भोजन में, उपासना में, औषधि में गो दुग्धान्न और गोकृषि अन्न का ही उपयोग करो। इसका नाम गोव्रत है। भोजन में घी, दूध लेंगे तो गाय का ही लेंगे, बाकी जानवरों का नहीं लेंगे। असुरों की मां है भैंस, भैंस का दूध खाने से आसुरी गुण बढ़ते हैं। भैंस में जो आलस, प्रमाद, जड़ता, क्रोध, ईर्ष्या और स्वार्थ है जो भैंस का दूध खाने वालों में भी आ जाता है। भैंस की बुद्धि जड़ है। कहते हैं न कि कैसा है भैंस जैसा। इसका मतलब है आलसी, प्रमादी, स्वार्थी, भुलक्कड़, गंदगी प्रिय और क्रोधी। ये सब भैंस के दुर्गुण हैं। भैंस का दूध दही घी खाने से, भैंस का पसलन करने से भैंसों के लक्षण उन मनुष्यों में आ जाते हैं। जर्सी तो उससे भी खतरनाक है वो तो साक्षात् पूतना है। उसके तो, जैसे पूतना जहर लगा के भगवान को दूध पिलाने आई थी ऐसे ही ऐसे ही इस जर्सी के दूध में विष है उससे मनोकायिक रोग पैदा होते हैं। कांकरेज गाय इतनी सुन्दर है, सौम्यवान है, शौर्यवान है, स्फूर्तिवान है उसका दूध पियो। उससे उसी की तरह स्फूर्ति आयेगी, उसके जैसे सुन्दर होंगे, उसकी जैसी बुद्धि आयेगी।

इसलिये भाई गोव्रती बनो। बच्चों को ऐसे पशुओं मत पिलाओ। बच्चों! भैंस और जर्सी का दूध ा पियोगे या नहीं पियोगे? बच्चे- नहीं पियेंगे महाराज जी। महाराजजी- बच्चों बताओ गाय का दूध कौन-कौन पियेगा? बच्चे- महाराजजी हम सब पियेंगे गाय का दूध। गाय का दूध पीने वाले अधिक है, भैंस और जर्सी का दूध पीने वाले कम है, मगर है। बताओ क्या आपके घर में गाय नहीं है क्या? बच्चों! आप घर जाकर अपने माता-पिता से आग्रह करो कि हम दूध पियेंगे तो सिर्फ गाय का ही पियेंगे, तो आपके घरवाले आपके लिये गाय अवश्य लायेंगे। भैंस का दूध मत पियो, नहीं तो भैंस जैसे बन जाओगे। इसलिए भाई सभी गोव्रती बनो, गाय का दूध पियो और बड़ों का आदर करो, छोटों से स्नेह करो।

एक बात हम और कहना चाहते हैं कि यह गोसेवा का कार्य किसी दल का, किसी समाज का, किसी सम्प्रदाय का, किसी वर्ग का, किसी व्यक्ति का नहीं। यह अमुक व्यक्तियों, समाजों के लिये आदरणीय हो और दूसरों के लिये अनादरणीय हो ऐसा नहीं। यह हम सभी का है जो गाय को मानने वाले हैं। गाय को जो मानने वाले लोग हैं वे इस अभियान से जुड़ेंगे ही। हम चाहते हैं सभी जुड़ें, सभी की गाय है। सभी दल, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब -इजम सबके लिये समान रूप से गाय अपने गव्य और आशीर्वाद देती है और इसी चाह से हम लोग घूम रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। फिर अमुक दल, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब-इजम के लोग नहीं जुड़ते हैं तो हम क्या कर सकते हैं? और जो जुड़ रहे हैं तो उनको क्या धक्का दें? हमें तो चाहिये सभी जुड़ें। जो गाय से श्रद्धा रखता हो वो जुड़े, आये।

राम दड़ी चौड़े पड़ी, जो कोई खेले आय।
दावा नहीं रामदासका, जीते जो ले जाय।।

यह कार्य सभी के लिये है। आइये! आप सभी दलों के, जातियों के, पार्टियों के, सभी इसमें सम्मिलित हो जाइये, सभी इसका सम्मान कीजिये और आपको लगे कि हाँ गाय की बात ठीक है तो इसको समर्थन दीजिये तन से, मन से, धन से, सब तरह से। जब ऐसा करेंगे तभी तो गोरक्षा होगी, तभी गोपालन होगा।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

वेदलक्षणा गोमाता की उत्पत्ति और उसका सर्वोपरि महत्व

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

पूज्या गोमाताओं की अपार महिमा और देवी गुणों से हिन्दू शास्त्रों के पृष्ठ भरे पड़े हैं। पुराणों में पूज्या गोमाता के प्रभाव और उसकी श्रेष्ठता की ऐसी अनगिनत कथाएँ मिलती हैं जिनसे विदित होता है कि हमारे पूर्वज पूज्या गोमाता के महान भक्त थे और उसकी सेवा व सुरक्षा करना अपना परम धर्म समझते थे। गो-रक्षा में प्राण अर्पण कर देना हिन्दू बड़े पुण्य की बात समझते आए और उसका पालन करना बड़े सौभाग्य की बात मानी जाती थी। गो का महत्व यहाँ तक समझा जाता था कि उसके शरीर में उन 33 करोड़ देवताओं का निवास बतलाया गया और उसकी उत्पत्ति प्रथम सृष्टी से पुर्व हो गई थी। पौराणिक कथाओं में पूज्या गोमाता कामधेनू को अमृत, लक्ष्मी, कल्पवृक्ष आदि चौदह रत्नों के अंतर्गत मानी गई। पुज्या गोमाताओं के भीतर बड़े-बड़े आध्यात्मिक तथा कल्याणकारी तत्त्व भरे हुए हैं।

पुराणों में वेदलक्षणा गोमाता की उत्पत्ति वाली कई प्रकार की कथायें मिलती हैं। पहली तो यह है कि आदिशक्ति सुरभि गोमाता का प्राकट्य प्रथम सृष्टी पूर्व परमात्मा और पराम्बा के प्रेम तत्व से हुआ। दूसरा, सृष्टी के आदिकाल में जब ब्रह्माजी एक मुख से अमृत पी रहे थे तो उनके दूसरे मुख से कुछ फेन निकल गया और उसी से लोक सुरभि की उत्पत्ति हुई। अन्य स्थान पर यह बतलाया गया है कि कामधेनु अर्थात् स्वर्गीय गाय की उत्पत्ति समुद्र मंथन के समय चौदह रत्नों के साथ ही हुई थी। कामधेनु से सुनहरे रंग की कपिला गाय उत्पन्न हुई जिसके दूध से क्षीर सागर बना।

प्राचीन काल से आर्य-जाति गो की बहुत अधिक महिमा मानती आई है। ऋग्वेद तथा अन्य वेदों में भी गो के गुणानुवाद के सैकड़ों मंत्र भरे पड़े हैं। गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने भी कहा है कि- **धेनूनामस्मि कामधुकः** 'गौओं में कामधेनु मैं हूँ।" गाय के शरीर में सभी देवता निवास करते हैं- **सर्वे देवाः स्थिता देहे, सर्वदेवमयी हि गौः।** गाय के शरीर में सभी देवताओं का वास है। अतः गाय साक्षात् सर्वदेवमयी (सभी देवताओं का स्वरूप) है।

गावो विश्वस्य मातरः सर्वदेवमयी हि गौः।
गोमयम् पवित्रं प्रोक्तं पवित्रा यजुषां माता।।

गायें समस्त विश्व की माता हैं और सभी देवताओं का स्वरूप हैं। गाय का गोबर अत्यंत पवित्र माना गया है और वह यजुर्वेद की माता के समान पूजनीय है।

सर्वदेवमये देवि सर्वदेवैरलंकृते।
मातर्ममाभिलषितं सफलं कुरु नन्दिनि।।

हे सर्वदेवमयी देवी! आप समस्त देवताओं से सुशोभित हैं। हे माता नन्दिनी! मेरी मनोकामनाओं को सफल करें।

शास्त्रों में कहा गया है कि धन की देवी लक्ष्मीजी सर्वप्रथम गाय के रूप में अवतरित हुई थी और उन्हीं के गोमय से बिल्व वृक्ष की उत्पत्ति हुई।

श्रीभगवान कपिल मुनि के श्राप से जले हुये अपने साठ हजार पूर्वजों की राख का पता जब राजा रघु नहीं लगा सके तब वे गुरु वशिष्ठ जी के पास आये। गुरुजी ने दया करके उनकी आँखों में नन्दिनी गाय का गोमूत्र आँज दिया, जिससे रघु को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई और वे पृथ्वी में दबी हुई अपने पुरखों की राख का पता लगाने में समर्थ हो सके।

गंगाजी को पहले पहल जब संसार (मृत्यु लोक) में आने को कहा तो वे बहुत दुःखी हुई और

आनाकानी करने लगीं। उन्होंने कहा कि "पृथ्वी पर पापी लोग मुझ में स्नानादि करके अपवित्र किया करेंगे, इसलिये मैं मृत्युलोक में नहीं जाऊँगी। तब पितामह ब्रह्माजी ने समझाया कि "लोग तुमको कितना भी अपवित्र करें किन्तु फिर भी गौ का पैर लगने से तुम पवित्र होती रहोगी।"

गवां खुरोत्थरेणुश्च स्पर्शश्चापि भविष्यति।
तेन पूता भविष्यन्ति पापिनोऽपि च संगमात्।।

अर्थात् गौ के खुरों से उठी हुई धूल और उनका स्पर्श तुम्हें प्राप्त होगा। उसके संयोग से तुम सदैव पवित्र बनी रहोगी और पापियों के पाप भी नष्ट होते रहेंगे। इससे भी गौ और गंगा के हिन्दू धर्म से विशेष सम्बन्ध होने पर प्रकाश पड़ता है।

श्री रामचन्द्र जी भगवान के पूर्वज महाराज श्री राजऋषि दिलीपजी की गोसेवा का उदाहरण बड़ा महत्वपूर्ण है। उन्होंने एक दिन स्वर्ग से लौटते समय मार्ग में बैठी कामधेनु गोमाता को देखकर प्रणाम नहीं किया, इस पर कामधेनु ने महाराज को पुत्रहीन होने का श्राप दे दिया। इससे दुःखी होकर वे गुरु वशिष्ठ के पास गये और श्राप से मुक्ति पाने के लिए बड़ी विनय करने लगे। वशिष्ठ जी ने कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय उनको दे दी और उसका 21 दिनों तक भली प्रकार से पूजन और सेवा करने को कहा। उनके आदेशानुसार राजा और रानी दोनों मिलकर उसकी सेवा करने लगे। राजा गाय को वन में चराने ले जाते। वे नन्दिनी के चलने पर चलते थे, उसके बैठने पर बैठ जाते थे। एक दिन राजा का ध्यान जरा सी देर के लिए वन के दृश्य की तरफ चला गया कि नन्दिनी बड़े जोर से चिल्लाई। राजा ने देखा कि एक सिंह गाय को दबोच कर खाना चाहता है।

इस पर उन्होंने तुरन्त अपना धनुष उठाकर तीर चलाना चाहा, पर दैवी मायावश तीर छूट न सका। तब राजा ने विवश होकर नन्दिनी गाय के बदले अपना शरीर सिंह को देने के लिये चुपचाप उसके सामने पड़ गये। पर जब कुछ देर तक पड़े रहने पर भी सिंह ने उनको नहीं खाया तो उन्होंने मस्तक उठाकर देखा। उस समय वह माया रूपी सिंह गायब हो चुका था और केवल नन्दिनी खड़ी प्रसन्न हो रही थी। राजा की इस अनुपम भक्ति से वह संतुष्ट हो गई और उसने राजा को पुत्र होने का वरदान दे दिया।

प्रसिद्ध देशभक्त महादेव गोविन्द रानाडे के वंश चलने के सम्बन्ध में भी ऐसी ही बात सुनने में आई है। उनके पिता के परदादी की दादी की 20 सनतानें हुई थी लेकिन विडम्बना यह थी कि उनमें से कोई जीवित नहीं बचती थी। कोई पुत्र नहीं था और वे वृद्ध हो चली थी। एक दिन कोई संत उनके दरवाजे पर भिक्षार्थ आ गए। दंपत्ति ने उनकी बड़ी सेवा की। साधु ने उन्हें उदास देखकर कारण पूछा और निःसन्तान होने की बात सुनकर कहा-तुम एक दूध देने वाली सवत्सा काली गाय रखो। उसको साबुत ज्वार खिलाओ, जो गोबर के साथ निकल आवें उन्हीं दानों को धोकर, साफ करके आटा तैयार करो। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर उसी की रोटी खाओ और भक्तिपूर्वक गोमाता की सेवा करो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो सकेगी। उन्होंने 12 वर्ष तक कठोर तप किया और 12 लाख बार गो की परिक्रमा की। फलस्वरूप उनको पुत्ररत्न प्राप्त हुआ जिनका नाम भास्कर अप्पा रखा गया और उन्हीं से वंश आगे बढ़ा। काली गाय से पुत्र प्राप्त होने की बात भारतवर्ष में सर्वत्र प्रसिद्ध है।

श्री गणेश जी के जन्म के समय की एक मनोहर कथा इस प्रकार है कि गणेशजी जब उत्पन्न हुए उसी समय महादेव जी ने भूल से उनका मस्तक काट दिया। इससे पार्वती जी बहुत अधिक रोने लगी। गणेश जी को ठीक करने को देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार बुलाये गये और उनको मुँह माँगा वरदान देने को कहा गया। इस पर उन्होंने किसी हाथी का मस्तक जोड़ कर गणेशजी को जीवित कर

दिया और वरदान में स्वयं महादेवजी को ही माँगा। इस पर बड़ी समस्या उपस्थित हो गई और निपटारा करने को देवताओं की पंचायत की गई। उसमें महादेवजी का मूल्य एक गाय रक्खा गया और वही अश्विनी कुमार को देकर संतुष्ट किया।

भगवान श्रीकृष्ण का गोपालन और गोभक्ति तो प्रसिद्ध ही है जिससे उनका नाम ही गोपाल पड़ गया। वे स्वयं गायों को चराते थे, उनकी सब प्रकार से सेवा सुश्रुषा करते थे, जो गायों को कष्ट पहुँचाता था उसे दण्ड देते थे। गायों की रक्षा को ही उन्होंने गोवर्धन धारण किया और इन्द्र का मान मिटा दिया। भागवत में बतलाया गया है कि सृष्टी के पूर्व काल में दिव्य गोलोक धाम में जब गोपियों के साथ रास करते हुए श्रीकृष्ण अत्यन्त कलान्त हो गये तो अपने बाँये अंग से उन्होंने आदि शक्ति सुरभि गो उत्पन्न की जिससे दूध का एक कुण्ड बन गया और सब किसी ने उसी दूध को पीकर अपनी थकान दूर की। श्री कृष्णजी के सम्बन्ध में ऐसी कथाएँ भरी पड़ी हैं। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि भगवान कृष्ण को गोपालन से ही अपूर्व शक्ति प्राप्त हुई थी जिसके प्रभाव से उन्होंने संसार का उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान प्रकट किया।

च्यवन ऋषि के विषय में भी एक बड़ी रोचक कथा है कि एक बार वे गंगाजी के गर्भ में तपस्या कर रहे थे। वहीं पर कुछ मछुए मछली मारने आये तो जाल में मछली के बदले मुनिजी ही फँस कर चले आये। मछुए उनको राजा के दरबार में बेचने के लिये ले गये। राजा ने उनके बदले में एक थैली सोने की मोहरें मछुओं को देना चाहा, परन्तु मुनि जी ने कहा कि हमारा मोल इतना कम नहीं हो सकता। राजा ने और भी बहुत सा सोना और अन्त में अपना समस्त राज्य मुनि के बदले में देना चाहा, पर उन्होंने उसे कम ही बतलाया। तब राजा ने विनयपूर्वक पूछा महाराज, आप ही बतलायें कि आपका मूल्य क्या होगा? च्यवन ऋषि बोले कि हमारा मूल्य एक गाय है। आप एक गाय दे दीजिये, बस यही हमारा वास्तविक मूल्य है। इस पर मछुओं को एक गाय दे दी गई। इससे प्रकट होता है कि उस युग में गाय का मूल्य राज्य से भी अधिक समझा जाता था।

राजस्थान के क्षत्रियों में प्रमुख सिसोदिया वंश के संस्थापक बप्पा रावल बचपन में गायें चराया करते थे। एक दिन की बात है कि एक गाय ने गोष्ठ (गौशाला) में आकर दूध नहीं दिया। मालकिन ने यह शंका करके कि बप्पा ने गाय को दुहकर सब दूध पी लिया है, इस कारण बप्पाजी को खूब पीटा। निरपराध बप्पा रावल को इससे मर्मान्तिक पीड़ा हुई। दूसरे दिन भी वे गाय चराने गए और इस बात की खूब निगरानी रखने लगे कि गाय के दूध को कौन पीता है? संध्या के समय जब गायें घर की ओर चलीं तो उन्होने देखा कि एक गाय झुण्ड से अलग होकर एक लिंग-महादेव पर दूध ढ़ाल रही है। अब तो बप्पाजी को चोर का पता लग गया और वह लाठी लेकर महादेव को पीटने लगे। भोले बाबा उनकी सरलता और सच्चाई को देखकर प्रसन्न हुए और उन्होंने बप्पाजी को वरदान दिया। इससे आगे चलकर वे बड़े प्रतापशाली नरेश बने और उन्होंने महान सिसोदिया वंश की स्थापना की। इसी वंश में राणा साँगा और महाराणा प्रताप जैसे देशभक्त उत्पन्न हुए जिनका नाम और यश आज भी लोगों को प्रेरणा दे रहा है।

इसी प्रकार भारतवर्ष में सदा से बड़े-बड़े व्यक्ति गौ की सेवा में संलग्न रहे हैं और इसके प्रभाव से उनको यश, मान, धन आदि समस्त साँसारिक सफलताएं प्राप्त हुई हैं। भारतीय इतिहास गोसेवा तथा गोरक्षा के प्रभाव से भरा हुआ है। वास्तव में पूज्या गोमाता भारतवर्ष के सामाजिक और धार्मिक जीवन का मुख्य स्तम्भ है और उसे सदैव सुदृढ़ बनाये रखना हम सब भारतवसियों का परम कर्त्तव्य है। अतः आइए आज ही गोसेवा तथा गोसुरक्षा का अक्षय पुण्य प्रदान करने वाला सत् संकल्प धारण करें। जय श्री कामधेनुकृष्ण।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे

.....गोकुल वासियों का विश्वास है कि चौगान गढ श्री बालकृष्ण भगवान की क्रिड़ा स्थली है। यह पावन स्थल वर्तमान श्री गोकुल गांव के बाहर श्री यमुना तट पर स्थित है। इस स्थान पर एकदम श्री यमुनाजी के पवित्र तट पर भगवान महादेवजी का मन्दिर है। थोड़ा ऊँचाई में दक्षिणाभिमुखी हनुमान जी विराजमान हैं। उनके आगे अखाड़ा भूमि बनी हुई है। उस समय वहाँ पर वर्ष में एक बार दंगल(कुश्ती)प्रतियोग्यता होती थी। उनके पास बाल ब्रह्मचीरी पहलवान का स्मृति मन्दिर था। शिवालय के ईशान में एक पुराना कूप है, उसका जल पवित्र निर्मल और स्वास्थ्यवर्धक है। श्री तुलसी, मरूआ बिल्व, शमी, पीपल आदि वृक्ष एवं कनेर, गुलाब आदि पुष्प लगे हुए थे।

उपरोक्त अवस्था में परम श्रद्धेय महाराज जी ने यहाँ पर सोलह माह निवास किया है। धीरे-धीरे आठों पहर की अनुष्ठानात्मक- दैनिक रूप से पूरे परिसर की साफ-सफाई, तुलसी आदि वृक्ष सींचन, पक्षियों को चुग्गा देना, श्री यमुना पूजन- अर्चन, गोकुल नगरी में श्री गोकुलनाथजी का मंगला दर्शन, अखाड़ा में विराजमान श्री बालाजी का पूजन- अर्चन, शिवजी का पूजन-अर्चन, नियमित संध्या, जपयज्ञ, श्री विष्णु सहस्रनाम, श्रीमदभगवद गीता और श्री रामचरित मानस पाठ आदि दिनचर्या बन गई थी। सहज ही आठों पहर का विधिवत नियोजन हो रहा था। कोई अलौकिक व अदृश्य शक्ति यह सब बाहरी क्रियाओं शास्त्रोक्त विधि से संपादित करवाती थी, जबकी आन्तरिक रूप से श्री गोपालकृष्ण के साथ गोकुल से रावल तक रात-दिन गोष्ठों का भ्रमण, गोवत्स चारण, श्री यमुना स्नान, माखनचोरी क्रिड़ा, गोरज क्रिड़ा और गोवत्स खेलन चारण में परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज श्री गोपालकृष्ण भगवान के वरिष्ठ सखा के रूप में तल्लिन हो गए थे। श्री गोपालकृष्ण की नित्य लिलाओं के दिव्य दर्शन का अनुभव तेलधारावत रात-दिन अखंड रूप से सोलह महिना पर्यन्त बना रहा।

चौघान गढ में 108 श्री रामचरित मानस पाठ अनुष्ठान संपन्न होने के उपलक्ष में अखंड रामचरित मानस पाठ, श्रीराम महायज्ञ और श्रीयुमना पूजन सहित विराट भण्डारा का तीन दिवसीय आयोजन गोकुल वासियों की ओर से किया गया। इस समारोह में हजारों साधु-संत महात्माओं तथा सदगृहस्थ धर्मात्माओं का आगमन हुआ था। आगन्तुक सैकड़ों सज्जनों से वाणी व्यवहार होने पर आन्तरिक रूप से श्री गोपालकृष्ण के साथ गोचारण लीलाएं यथावत होती रही।

उपरोक्त आयोजन संपन्न होने के सप्ताह बाद एक बार रात्रिकालीन समय में महाराज जी अपने नित्य सखा का हाथ पकड़कर बैठे-बैठे गोमहिमा की वार्ता कर रहे थे कि अचानक श्री गोपालकृष्ण खड़े हो गए और ऊपर उठने लगे। हाथ फिसल कर छूट गया, हृदय से अत्यंत तेज चीख-पुकार निकली। आसपास में विश्राम कर रहे लोग जग गए। श्रद्धेय महाराजजी जोर-जोर से विलाप करने लगे। इनके हृदय में श्रीगोपालकृष्ण वाली नित्यलीला वियोग की चिन्नगारी उत्पन्न हो गई। थोड़े समय में चिन्नगारी ने ज्वाला का रूप धारण कर लिया। शरीर पसीने से तरबतर हो गया। भयंकर तड़पन से मूर्छा आ गई। उस अवस्था में एक आवाज आई कि हिमालय चले आओ। यहाँ शीतलता मिलेगी। यह आदि गुरु का आदेश है, इतना सुनते ही पूज्य महाराज जी तत्काल आसन से खड़े होकर हिमालय प्रस्थान की अनुमती हेतु चौगान गढ हनुमान जी के चरणो में प्रणाम पूर्वक

प्रार्थना करने लगे। श्रीमहावीर हनुमान जी महाराज ने सहर्ष स्वीकृति के साथ अमोघ आशीर्वाद प्रदान किया। आपने अपने परम सरंक्षक एवं मुख्य अभिभावक श्रीहनुमान जी की कृपा को साथ लेकर यमुना पार करते हुए हिमालय की ओर प्रस्थान किया। उस रात चौगान गढ में अन्य महानुभाव विश्राम कर रहे थे उनमें से एक श्री वैद्य ब्रह्मानंदजी जो स्वयं साथ चलने का आग्रह करने लगे। महाराज जी यह कहते हुए विजय कर गए कि हमको केवल एक ही चाहिए। अंधेरी रात को घंटों तक श्री यमुना जी की रज में चलते-चलते यमुना जल प्रवाह के निकट ब्रह्ममुहूर्त में पहुँच गए।

श्री यमुनाजी को प्रणाम करके आचमन स्नान एवं संध्या आदि नित्य क्रम संपन्न किया। तत्पश्चात पुन: श्रीयमुना महारानी को साष्टांग प्रणाम करते जल प्रवाह में चल कर दूसरे तट पर स्थित एक फौजी छावनी होते हुए मथुरा रेलवे स्टेशन पर उस समय उपलब्ध रेल गाड़ी में बैठ गए। अलग-अलग रेल गाड़ियों में कई दिनों पर्यन्त प्रवास करके हरिद्वार पुरी पहुँचे। यहाँ त्रिलोक पावनी श्रीगंगाजी के दर्शन वन्दन पूर्वक उनके शीतल आंचल में विश्राम का अनुभव किया। दो-तीन दिन रात्रिकालीन निवास केवल गंगाजल पान पूर्वक माँ गंगा के पावन तट पर तीन दिन पर्यन्त किया।

चौथे दिन प्रात:काल स्नान संध्या वन्दन आदि नित्य नियम संपन्न करके माँ गंगा के तट तट प्रवास करते हुए चल रहे थे, मध्याह्न समय अचानक श्रीगंगा तट एक अत्यंत सौम्यस्वरूपा माताजी पधारी उस माँ ने महाराज जी को कहा- बालक फलाहार प्रसाद ग्रहण करोगे? हम लेकर आए हैं। यह सुनकर गत दिनों से मात्र गंगाजल से निर्वाह करने वाले परम श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री जैसी आपकी इच्छा बोलकर गंगा रज में विराजमान हो गए। वहाँ उपस्थित श्री माताजी ने वात्सल्य पूर्वक फल और गोदुग्ध का प्रसाद करवाकर करूणा एवं स्नेहपूर्ण नयनों से देखते हुए गंगा तट से दूर राजाजी पार्क के गहन वन में प्रवेश कर लिया। इस तरह अचानक गंगा किनारे माँ का आगमन वात्सल्य की वृष्टी आदि से अभीभूत परम श्रद्धेय महाराजजी को पूरा विश्वास हो गया कि यह त्रिलोक पावनी साक्षात गंगा माताजी है। अत: मूक रूप से अनुभव करके आगे प्रस्थान किया।

सांयकाल ऋषिकेश के आसपास श्री गंगा में स्नान, संध्या, वन्दन उपरांत गंगा तट पर विद्यमान सघन वृक्षावली आश्रम में बने विशाल कुटीरनुमा कच्चे छप्पर के बाहर खाली बरामदा देखकर महाराजश्री ने अपना आसन लगा दिया। कुछ देर पश्चात एक भद्र पुरुष कुटीर से बाहर आए जो आध्यात्मिक साधक जैसे लग रहे थे। बोले- अगर रात्रि विश्राम करना है तो अमुक-अमुक आश्रम जाइए वहाँ भोजन और दक्षिणा दोनों मिलेंगे। यहाँ पर तो केवल भगवद प्राप्ति का उद्देश्य रखने वाले साधक ही रह सकते हैं। महाराजश्री ने उनको निवेदन किया कि हमको भोजन दक्षिणा अथवा अन्य कोई सुविधा नहीं चाहिए, केवल ठंड से बचाव के लिए इस कुटीर के बरामदे में एक रात विश्राम करना है। प्रात:काल हम आगे प्रस्थान करेंगे। उन्होंने महाराजजी के निवेदन को स्वीकार करके बिछाने औढ़ने का प्रबंध करते हुए बताया कि इस विशाल कुटीर में सभी आध्यात्मिक साधकों का सहारा हिमालय वासी परम विरक्त अवधूत सन्यासी स्वामी श्री कृष्णानंदजी जी पधारे हुए हैं। अगर आपकी इच्छा हो तो उनसे आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

यह सुनकर महाराजश्री अपने आसन से उठकर उस विशाल कुटीर के अन्दर चले गए। कुटीर के मध्य भाग में एक सौम्यस्वरूप अवधूत महापुरुष विराजमान थे, उनके आगे यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्जवलित थी। आसपास में सात तपस्वी साधक आसन लगाकर बैठे ध्यान मगन थे। महाराजश्री अवधूत महापुरुष को साष्टांग प्रणाम करके उनके पास भूमि पर बैठ

गए। पूज्य अवधूत सन्यासीजी ने नेत्र खोलकर आपको देखा और बड़े आत्मीय भाव से अलौकिक वाणी में लगभग एक मुहूर्त पर्यन्त दिव्य उपदेश दिया। तदुपरांत वहाँ उपस्थित सातों साधकों को अन्यत्र जाने का संकेत किया तो वे सभी साष्टांग प्रणाम करके कुटीर में आगे की ओर अन्दर चले गए। उसके बाद महाराजश्री को निकट आने का निर्देश दिया। जब बिल्कुल पास जाकर प्रणाम करके बैठ गए तब महाराजश्री के सिर पर हाथ धर कर अत्यंत गुप्त गुरु मंत्र एवं सांकेतिक सन्यास दीक्षा प्रदान की। तत्क्षण महाराजजी के नेत्र अपलक हो गए। मन शून्य में चला गया। इसी अवस्था में मन्द-मन्द आवाज से 33 महिना हिमालय निवास का आदेश सुनाई दिया।

सतगुरु परमात्मा की अति कृपा से महाराजजी के हृदय में परमानंद भर गया। उसी समय पुनः वे ही भद्र पुरुष आध्यात्मिक साधक कक्ष में आए और कहा कि आपको गुरुदेव भगवान का आशीर्वाद मिल गया। अब अपने आसन पर जाकर विश्राम कीजिए। अच्छा जी कहकर पूज्य अवधूतजी को प्रणाम करके महाराजश्री आसन पर भगवान का स्मरण करते हुए श्वासन में लेट गए। प्रातःकाल जगते ही स्वपन्न की तरह अपने को गंगा तट पर एक वृक्ष के नीचे आसन पर अनुभव किया। प्रातः स्मरण करते हुए कुछ समय आसन पर बैठे रहे। थोड़ी देर में एक अलौकिक प्रकाश होने के बाद स्थिर दृष्टि और शान्त मन से नित्य नियमपूर्वक गंगा स्नान संपन्न करके गंगाजी के तट से प्रस्थान कर लिया परंतु आसपास में अन्य दृश्य दिखने बन्द हो गए। धीरे-धीरे बाह्य स्मृति लुप्त होकर गहरी नींद्रा जैसी स्थिति हो गई। उसी जागृत सुषुप्ति अवस्था में महाराजश्री चलते रहे। कभी-कभी बाह्य जागृति आती तब गंगा तट पर चलने, सोने, बैठने, फल आदि ग्रहण करने का आभास मात्र होता था। इससे अधिक कुछ ज्ञात नहीं रहा।

कुछ दिनों के पश्चात अगस्त्य नामक स्थान पर एक युवा अवधूत मिले जो वनवासी भगवान राम जैसे लगते थे। वे महाराजजी को एकांतवास के लिए पर्वत पार करके बड़े जलप्रपात के पास स्थित गुफा में लेकर पहुँच गए। उस छोटी सी गुफा के अन्दर धूणा चेताया और कहा कि यहाँ रहिए, हम बार-बार आपको मिलते रहेंगे। अब हम माताजी की गाय चराने जा रहे हैं। ऐसा कहकर युवा अवधूत गुफा से चले गए। महाराज जी वहीं पर तंद्रा अवस्था में बैठ रहे।

तीन दिनों के पश्चात दो प्रौढ़ आयु के विप्र देवताओं ने उस गुफा में प्रवेश किया। प्रणाम करके उनमें से एक युवा अवधूत महापुरुष महाराजश्री को बोले कि मैं नीचे मण्डल गांव में शिक्षक हूँ। गत रात के अंतिम पहर में हमको श्री अनसूया माताजी ने स्वप्न में आदेश दिया है कि अत्रि गुफा में विराजमान किशोर साधु के लिए अगले 33 माह पर्यन्त आपको गोदुग्ध तथा फल की व्यवस्था करनी है। प्रातःकाल फल और गोदुग्ध लेकर जाइए, वे तीन दिनों से निराहार बैठे हैं। माँ की आज्ञा से हम पुजारी जी के साथ यहाँ उपस्थित हुए हैं। यह गोदुग्ध और फल ग्रहण कीजिए।

आगन्तुक महानुभावों के अनुरोध पर महाराजश्री ने एक गिलास गोदुग्ध व एक फल का प्रसाद पाकर आचमन किया और उनसे पूछा कि गोदुग्ध कहाँ से लाये हो? तब उन्होंने बताया कि माँ अनसूयाजी के मन्दिर की गोमाताओं का है। अगले 33 महिनों तक इन्हीं गोमाताओं से प्राप्त दुग्ध तथा हमारे मानदेय से क्रय किये गए फल आपको प्रसाद रूप में ग्रहण करना है। इस पर परम श्रद्धेय महाराजजी ने अनसूया माता मन्दिर की दूरी पूछी तो शिक्षक महोदय बोले कि इधर मील भर दूर है। आप वहीं से इस गुफा में आये होंगे। महाराजश्री ने कहा नहीं हम तो अगस्त्य से सीधे आये। वे लोग बोले उधर कोई रास्ता नहीं है आप किसके साथ आए हो? महाराजजी बोले एक युवा अवधूत महात्मा हमको यहाँ तक.........शेष अगले अंक में

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्

(साभार : साधक संजीवनी)

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजम्(गीता 18/44)

खेती करना, गायोंकी रक्षा करना, उनकी वंश वद्धि करना और शुद्ध व्यापार करना (ये सबके-सब) वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं।

शुद्ध व्यापार करनेका तात्पर्य है कि जिस देशमें, जिस समय, जिस वस्तुकी आवश्यकता हो, लोगोंके हितकी भावनासे उस वस्तुको (जहाँ वह मिलती हो, वहाँसे ला करके) उसी देशमें पहुँचाना; प्रजाकी आवश्यक वस्तुओंके अभावकी पूर्ति कैसे हो, वस्तुओंके अभावमें कोई कष्ट न पायें इस भावसे सच्चाईके साथ वस्तुओंका वितरण करना।

भगवान् श्रीकृष्ण (नन्दबाबाको लेकर) अपनेको वैश्य ही मानते हैं। इसलिये उन्होंने स्वयं गायों और बछड़ोंको चराया। मनु महाराजने वैश्य-वृत्तिमें 'पशूनां रक्षणम्' (मनुस्मृति 1/90) (पशुओंकी रक्षा करना)कहा है, पर यहाँ भगवान् (उपर्युक्त पदोंसे) अपने जाति-भाइयोंसे मानो यह कहते हैं कि तुमलोग सब पशुओंका पालन, उनकी रक्षा न कर सको तो कम-से-कम गायोंका पालन और उनकी रक्षा जरूर करना। गायोंकी वृद्धि न कर सको तो कोई बात नहीं; परन्तु उनकी रक्षा जरूर करना, जिससे हमारा गोधन घट न जाय। इसलिये वैश्य-समाजको चाहिये कि वह गायोंकी रक्षामें अपना तन-मन-धन लगा दे, उनकी रक्षा करनेमें अपनी शक्ति बचाकर न रखे।

गोरक्षा-सम्बन्धी विशेष बात

मनुष्योंके लिये गाय सब दृष्टियोंसे पालनीय है। गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष-इन चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धि होती है। आजके अर्थप्रधान युगमें तो गाय अत्यन्त ही उपयोगी है। गोपालनसे, गायके दूध, घी, गोबर आदिसे धनकी वृद्धि होती है। हमारा देश कृषिप्रधान है। अत: यहाँ खेतीमें जितनी प्रधानता बैलोंकी है, उतनी प्रधानता अन्य किसीकी भी नहीं है। भैंसेके द्वारा भी खेती की जाती है, पर खेतीमें जितना काम बैल कर सकता है, उतना भैंसा नहीं कर सकता। भैंसा बलवान् तो होता है, पर वह धूप सहन नहीं कर सकता। धूपमें चलनेसे वह जीभ निकाल देता है, जबकि बैल धूपमें भी चलता रहता है। कारण कि भैंसेमें सात्त्विक बल नहीं होता, जबकि बैलमें सात्त्विक बल होता है। बैलोंकी अपेक्षा भैंसे कम भी होते हैं। ऐसे ही ऊँटसे भी खेती की जाती है, पर ऊँट भैंसेसे भी कम होते हैं और बहुत मँहगे होते हैं। खेती करनेवाला हरेक आदमी ऊँट नहीं खरीद सकता। आजकल अच्छे-अच्छे जवान बैल मारे जानेके कारण बैल भी मँहगे हो गये हैं, तो भी वे ऊँट जितने मँहगे नहीं हैं। यदि घरोंमें गायें रखी जायँ तो बैल घरोंमें ही पैदा हो जाते हैं, खरीदने नहीं पड़ते। विदेशी गायोंके जो बैल होते हैं, वे खेतीमें काम नहीं आ सकते; क्योंकि उनके कन्धे न होनेसे उनपर जुआ नहीं रखा जा सकता।

गाय पवित्र होती है। उसके शरीरका स्पर्श करनेवाली हवा भी पवित्र होती है। गायके गोबर-गोमूत्र भी पवित्र होते हैं। गोबरसे लिपे हुए घरोंमें प्लेग, हैजा आदि भयंकर बीमारियाँ नहीं आतीं। इसके सिवाय युद्धके समय गोबरसे लिपे हुए मकानोंपर बमका उतना असर नहीं होता, जितना सीमेन्ट आदिसे बने हुए मकानोंपर होता है। गोबरमें जहर खींचनेकी विशेष शक्ति होती है। काशीमें कोई व्यक्ति साँप काटनेसे मर गया। लोग उसकी दाह-क्रिया करनेके लिये उसको गंगाके किनारे ले गये। वहाँपर एक साधु रहते थे। उन्होंने पूछा कि इस व्यक्तिको क्या हुआ? लोगोंने कहा कि यह साँप काटनेसे मरा है। साधुने कहा कि यह मरा नहीं है,......शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

........मुद मंगल कौन हैं, जानते हैं आप? मुद मंगल एक महान ऋषि हैं। मुद मंगल महान ऋषि शांडिल्य की बहन पूर्णमासी का पुत्र है और यह पूर्णमासी पुराहितानी सतयुग की है। उसी समय इनके पुत्र के रूप में जन्म हुआ है मुद मंगल का। इनका निवास काशी में था और जब भगवान कृष्ण के अवतार लीला का समय हुआ तो भगवत संकेत से पूर्णमासी पुरोहितानी अपने छोटे से बालक मुद मंगल को गोद में लेकर आई है और अपने भैया शांडिल्य महर्षि के आश्रम में विराजी है।

ब्रजवासी बहुत जल्दी नाम धर दे। किसी का भी नाम धर दे। एक महात्मा थे हिमाचल प्रदेश के ब्रज में रह रहे थे, उनका नाम धर दिया ब्रजवासियों ने गोरे बाबा। नाम उनका गोरे बाबा नहीं था फिर भी सब ब्रजवासी कहते गोरे बाबा। एक महात्मा हमारे परिचित थे उनका नाम धर दिया कारे बाबा। ऐसे नाम धर देते हैं ब्रजवासी। ऐसे ही पूर्णमासी का नाम धर पुरोहितानी जी। वो पुरोहित जी की बहन है और नाम धर दिया पुरोहितानी। सतयुग के है मुद मंगल और 28 वी चतुर्युगी के द्वापर तक हैं वो सोचो। मुद मंगल भगवान श्री कृष्ण से आयु में 5 वर्ष बड़े हैं, इतनी लंबी लाखों करोड़ों वर्ष मुद मंगल की आयु हैं। पर ये ऐसे महान योगी हैं कि सतयुग से लेकर द्वापर के अंत तक कृष्ण अवतार 5 वर्ष की आयु के रह गये। संपूर्ण वेदांत शास्त्रों के प्रकांड विद्वान है, ऐसे वैसे ना है लठ गंवार। यह तो लीला है, लीला में इस प्रकार का परिहास का पात्र होने से ऐसा उनको कहा जाता है। और यज्ञोवपविती है, यज्ञोपवितधारी है। एक बात और रहस्य की है- मुद मंगल के आशीर्वाद से ही सबके लाला भये हैं। मुद मंगल आशीर्वाद देकर आया है- पुत्रवती भव! बाबा को कहा पुत्रवान भव। कीर्ति को कहा- पुत्रीवती भव। और ठाकुर जी के जितने सखा प्रकट हुए हैं गोपियों के घर में उन सबके जन्म का आशीर्वाद मुद मंगल ने ही दिया है। मुद मंगल भगवान की लीला का प्रधान पात्र हैं। अतीव सुंदर हैं, महायोगेश्वर हैं, वह कोई विकलांग नहीं है। ठाकरजी 6 साल के हैं और ये 5 साल बड़े हैं तो कितने साल के हुए? 11 साल के मुद मंगल जी।

रोहिणी मैया, यशोदा मैया परोसकर जीमा रही है। ग्वाल मण्डल में मुद मंगल भी बैठा है। मैया ने सब कुछ सामग्री तो परोसी पर मुद मंगल को खीर नहीं परोसी। क्यों नहीं परोसी? क्योंकि यह ब्राह्मणी का पुत्र है और खीर जो है यह तो कच्ची रसोई मानी जाती है। लड्डू, हलवा, पुरी सब परोस दिये लेकिन खीर नहीं परोसी। सब बालक को खाने लगे, पर मुद मंगल छत की ओर ऊपर देखने लगे। रोहिणी और यशोदा मैया ने कहा- भैया अरे ब्राह्मण को बेटो है थारी में देख, कितनी बड़ी सोने की थारी में तुझे अच्छे-अच्छे पकवान परोसे हैं। तू ऊपर क्या देख रहा है। मुद मंगल बोले मैया मैं ब्रह्मणी को बेटो हूँ भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल की जानने वालो हूँ। मैं देख रहा हूँ कि बड़ो खराब मुहूर्त आया है यह छत गिर पड़ेगी। सब के सब इसके नीचे दब जायेंगे, केवल मैं अकेला बचूंगा।

यह सुनते ही मैया की छाती कांप गई। अरे मुद मंगल! ब्राह्मणी का पुत्र होकर तूं कैसी अमंगल की कामना कर रहा है? अरे तुझे तो आशीर्वाद देना चाहिए लला को गैया चरावे को मुहूर्त है और तू कैसी बात बोल रहे हो। अरे छत के नीचे तू भी तो बैठो है तू बच जाएगा क्या? हाँ मैया मैं तो पूरमपट्ट बच जाऊंगा। कैसे बच जायेगा? बोले जैसे आज खीर से बच गया हूँ ऐसे ही छत के नीचे दबने से बच जाऊंगो। मैया हंसते-हंसते लोटपोट हो गई। अरे

लालची ब्राह्मण! तूने खीर खाने को ऐसी बात कह रहे है? तो ले खीर खा ले, क्या करूं तेरे जनेऊ है।

हमारे ब्रज में तो कहते हैं कि बालकृष्ण के साथ बैठकर खाने में यह जनेऊ बाधक बन रही हो तो इसे एक तरफ रख देनी चाहिये। मैया तू सांची कहे तो इसे पीपल के लपेट आऊं पर मैं कन्हैया को सखा हूँ तो या के साथ तो खीर खाऊंगो। हमारो आचार विचार तो है पर जब कन्हैया के संग हैं तो हमारा सर्वस्व तो कन्हैया है। फिर हमारो आचार-विचार अलग से नहीं है। इसलिये कहा है-

घृते पक्वं, पयसि पक्वं, पक्वमेव च केवलम्।
कच्ची सा च भवेद्रसोई, पक्की सा न कदाचन।।

जो भोजन प्रसाद घी में पका हुआ हो (जैसे- पूड़ी, कचोरी, हलुआ), जो दूध में पका हुआ हो (जैसे- खीर) या जो केवल अपने आप में ही सिद्ध (पका हुआ) हो (जैसे फल या सूखे मेवे) वह कभी भी कच्ची रसोई नहीं कहलाती है। वह सदैव पक्की रसोई ही होती है।

भावार्थ: वह भोजन जो घी, तेल या दूध में पकाया गया हो या जिसे तलकर बनाया गया हो, उसे पक्की रसोई या पक्का खाना कहा जाता है। इसके विपरीत, जो भोजन सीधे पानी में उबालकर बनाया जाता है (जैसे साधारण दाल, चावल या उबली हुई रोटी), उसे कच्ची रसोई माना जाता है। ऐसी पक्की रसोई को फल के समान (पवित्र) ग्रहण करना चाहिये केवल चावल को छोड़कर। **तत्सर्व फलवद्ग्राह्यं केवलम् तण्डुलम् विना।**

पक्की और कच्ची रसोई का भेद क्या है? भारतीय संस्कृति और परम्परा में कच्ची रसोई और पक्की रसोई का अंतर केवल भोजन के पकने और न पकने से नहीं बल्कि उसे बनाने के तरीके और बनाने के माध्यम (जैसे पानी, दूध, घी, तेल) से है। **पक्की रसोई**- जो घी, तेल, दूध में पकाई हुई चीज है अथवा केवल अग्नि में पकाई हुई चीज है या अपने आप पकी हुई चीज है उसे पक्की रसोई कहते हैं। जैसे पूड़ी, कचोरी, हलुआ, परोंठा, समोचा, पुलाव, मालपुआ और घी-तेल में पकी हुई अन्य चीजें हैं। पक्की रसोई बहुत दिनों तक खराब नहीं होती है तथा रसोई के बाहर यात्रा आदि में पाई जा सकती है। इस अन्न को फल के समान ग्रहण करना चाहिए। **कच्ची रसोई**- किंतु जो केवल पानी में पकी हुई रसोई है उसे कच्ची रसोई कहा जाता है। जैसे सादी रोटी, दाल, उबले हुए चावल, खिचड़ी, दलिया, राबड़ी आदि। कच्ची रसोई अधिक समय तक संग्रह करके रखी नहीं जा सकती। इसे रसोई में बैठकर ही पाया जाता है। यह नियमित राजमर्रा का भोजन है।

मुद मंगल कहते हैं- मैया तूं ब्राह्मणता की दुहाई देकर हमको खीर से वंचित मत कर, तुझे कोई दोष नहीं लगेगा। तू तो खीर परोस दे। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय। मैया ने हंसकर खीर परोसी है और मुद मंगल चाव से पाने लगे हैं। हमारे ब्रज में एक बात और प्रसिद्ध है कि जब से मैया ने मुद मंगल को परोसी है तब से ब्रज में खीर को कच्ची नहीं मानते हैं। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय। खीर को भी पक्का मानने लगे ब्रज में ऐसी एक प्रसिद्धी है और उसका हम ब्रजवासी आदर करते हैं। दूसरी बात यह है कि-

अमृतं शिशिरे वह्निः अमृतं प्रियदर्शनम्।
अमृतं राजसम्मानं अमृतं क्षीरभोजनम्।।

कड़ाके की ठंड (शिशिर ऋतु) में अग्नि का ताप अमृत के समान सुखद होता है। किसी प्रिय व्यक्ति का दर्शन होना अमृत के समान आनंददायक है। समाज या शासन द्वारा मिला सम्मान अमृत के समान गौरवशाली होता है और दूध से बना भोजन (जैसे खीर) शरीर के लिए अमृत के समान पुष्टिवर्धक होता है।

कुछ चीजें ऐसी हैं बाबा जो अमृत का काम करती है। शिशिर ऋतु में अग्नि अमृत का काम

करती है। शिशिर ऋतु में अग्नि जरूर तापना चाहिए यह भी एक चिकित्सा है। यह हीटर तापने वाली बात नहीं कह रहे हैं हम। अग्नि तापने की बात कर रहे हैं। अग्नि में भी यदि वेदलक्षणा गाय के गोबर के कंडे की अग्नि से तपा जाए तो और अधिक उसका एक स्वास्थ्य को लाभ है। ऐसे ही प्रिय व्यक्ति के दर्शन/मेल भी अमृत के समान है। राज सम्मान भी अमृत है और दूध अथवा खीर यह अमृत है।

हमारे यहां रेवासा धाम में एक परंपरा है। आप लोगों में से बहुत से लोगों ने रेवासा धाम का दर्शन किया है। यहाँ आज हमको विपिन बिहारीदास जी ने बताया कि सीकर, झुंझुनु क्षेत्र के लोग यहाँ खूब हैं और शेखावाटी क्षेत्र के महान तीर्थ धाम जीण माता, शाकंभरी माता, खाटू श्याम और सालासर ये चार बहुत बड़े तीर्थ हैं राजस्थान के। उनके ठीक मध्य में रेवासा धाम स्थापित है। इसलिए रेवासा उनका सुमेरू है ऐसा समझिए और चारों स्थान आज भी रेवासा से जुड़े हुए हैं। सालासर बालाजी के प्रकटकर्ता श्री महात्माजी श्री मोहनदास जी महाराज रेवासा पीठ के ही शिष्य थे। अग्रदेवाचार्य जी के ही शिष्य थे। आज भी सालासर बालाजी में वहाँ का जो पुजारी परिवार है वो अपने गुरु गद्दी के रूप में रेवासा धाम को ही स्वीकार करता है। आज भी उनके बालकों के यज्ञोपवीत होते हैं तो मंत्र दीक्षा रेवासा पीठ पर जो आचार्य विराजमान होते हैं वे ही देते हैं। तब जाकर वो पुजारी के रूप में प्रवेश पाते हैं।

जीण माता में पूजा का संपूर्ण वर्षभर का पूजा विधान जब रेवासा महाराज हस्ताक्षर करते हैं शरद पूर्णिमा के दिन तब बदलता है। ऐसी शाकंभरी में सबको भीतर प्रवेश नहीं है, रेवासा का आचार्य जाएगा तो गर्भगृह में जाएगा कहीं भी। तो यह विशेष बात है वहाँ की। तो हाँ, रेवासा की बात खीर की बात पर याद आई। वहाँ का नियम है– जानकीनाथजी को 12 माह खीर का भोग लगता है। चाहे आप छप्पन भोग बना दो, चाहे जितने व्यंजन हो पर खीर तो ठाकुर जी को रोज भोग लगेगी ही। एकादशी को मखाने की खीर या फलाहारी खीर भोग लग जाएगी लेकिन खीर पक्की भोग लगेगी। क्योंकि **अमृतं क्षीरभोजनम्**। खीर का भोजन अमृत है। भैया ठंडी में तो खीर जरूर खानी चाहिए। बढ़िया अधोटा दूध की बनाकर और ठाकुर जी को भोग लगाकर थोड़ा उसमें घृत छोड़ दो, थोड़ा उसमें शहद छोड़ दो, थोड़ा केशर छोड़ दो तो क्या कहना, ऐसी सुंदर खीर को थोड़ा ठण्डा होने के लिये छोड़ दो फिर भोग लगाओ ठाकुर जी को फिर पाओ तो देखा फिर यह सब चटपटा फटपटा खाने की जरूरत नहीं है। एक कटोरी खीर खाओ मस्त हो जाओ फिर भले ही बाबा के जैसे उघाड़ा होकर डोलो फिर ठंड नहीं लगेगी। बोलो वृंदावन बिहारी लाल की जय।

बालकों ने प्रेम से भोजन किया और भोजन के बाद अब नंद बाबा और मैया आई। नंद बाबा श्री ठाकुर जी के लिए पादुका और छाता और पादुका लेकर आए हैं। बाबा ने कहा– लाला यह पहन। ठाकुरजी ने कहा– नहीं। इस लीला में मुझे केवल गो चारण नहीं करना है, मुझे गो उपासना का आदर्श प्रस्तुत करना है। उपासना जूता पहनकर नहीं होती। संसार के सामने और उपासना में देखते हैं। उपासना सेवा पूजा तो जूता उतार के होती है। मैं को उपासना करने जा रहा हूँ केवल गया चराने नहीं जा रहा हूं इसलिए मैं जूता नहीं पहन सकता क्योंकि गाय मेरी इष्ट देवता है और मैं इसका पुजारी मैं, इसका उपासक। छत्र लगाकर के भी सेवा नहीं की जाती है क्योंकि सेवक के ऊपर छत्र भी नहीं लग सकता, छत्र तो उपास्य के ऊपर लगता है। मैं जूती भी नहीं पहन सकता और छत्र भी धारण नहीं कर सकता। मैया बोली– लाला तेरे चरण बड़े कोमल है, चरण में कांटे कंकर लगेंगे। बालकृष्ण प्रभु बोले कि ठीक है मैया-बाबा आप दोनों इतने हठ....लगातार अगले

विभिन्न सनातन धर्म शास्त्रों में गो महिमा

गाय 'अघ्न्या' है। इसका वध सर्वथा अनुचित है।

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत् तु यः।।

श्रुति में गौओं को अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है। ऐसी स्थिति में कौन उन्हें मारने का विचार करेगा? जो पुरुष गाय और बैलों को मारता है, वह महान पाप करता है।

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किन्चिदिहाच्युत।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्।

(महर्षि च्यवन ने राजा नहुष से कहा-) अपनी मर्यादा से कभी च्युत न होनेवाले हे राजेन्द्र! मैं इस संसार में गौओं के समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। वीर भूपाल! गौओं के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओं का दान देना और उनका दर्शन करना- इनकी शास्त्रों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण की प्राप्ति कराने वाले हैं।

गावो लक्ष्म्याहाः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः।।

गौएँ सदा लक्ष्मी की मूल हैं। गौओं में पाप की स्थिति नहीं होती है। गौएँ ही मनुष्यों को सर्वदा अन्न और देवताओं को हविष्य देने वाली हैं।

स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ।
गावो यज्ञस्य नोयो वै तथा यज्ञस्य ता मुखं।।

स्वाहा और वषट्कार सदा गौओं में ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञ का संचालन करने वाली तथा उसका मुख हैं।

अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतनं चौताः सर्वलोकनमस्कृताः।।

विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहने पर अमृत ही देती हैं। वे अमृत की आधारभूत हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है।

तेजसा वपुषा चौव गावो वह्निसमा भुवि।
गावो हि सुमहत् तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः।।

इस पृथ्वी पर गौएँ अपनी काया और कान्ति से अग्नि के समान हैं। वे महान तेज की राशि और समस्त प्राणियों को सुख देने वाली हैं।

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुन्चति निर्भयं।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति।।

गौओं का समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थान की शोभा बढ़ा देता है और वहाँ के सारे पापों को खींच लेता है।

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गे पि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किन्चित् परं स्मृतं।।

गौएँ स्वर्ग की सीढ़ी हैं, गौएँ स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली देवियाँ हैं। उनसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।

इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तंमाहात्म्यं भरतर्षभ।
गुणौकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु।।

भरतश्रेष्ठ ! यह मैंने गौओं का माहात्म्य बताया है। इसमें उनके दिव्य गुणों का दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। गौओं के संपूर्ण गुणों का वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

तुल्यानामानि देयाणि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती।।

(भीष्म जी ने कहा- युधिष्ठिर!) गाय, भूमि और सरस्वती- ये तीनों समान नाम वाली हैं- इन तीनों वस्तुओं का दान करना चाहिए। इन तीनों के दान का फल भी समान ही है। ये तीनों वस्तुएँ मनुष्यों की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करने वाली हैं।

गावः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावनं ह्येतदुत्तमम्।

गौएँ सर्वश्रेष्ठ तथा पवित्र, पूजन करने योग्य और संसार में सबसे उत्तम हैं।

श्री राम कथा

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)

श्री राम पंचायती मंदिर संगरिया

पिछले अंक से आगे........

.........उत्तरकांड मानस जब पढ़ेंगे तो उसमें आया है 'एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि, पीड़हि संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि'- उस प्रकरण में व्याधि मूलक चिंतन है। आधी क्या है? एक ही रोग के वश होकर मनुष्य मर जाते हैं, फिर ये तो बहुत से असाध्य रोग जीव को लगे हैं। उस प्रकरण में व्याधि मूलक चिंतन है। आधी क्या है विस्तार की कथा फिर कभी लेंगे। भवरुज परिवार- संसार में रोगों का एकदम मानो अंबार है, अनेकों प्रकार के रोग हमारे जीवन में आते हैं।

रोग से तात्पर्य जब सीधा-सीधा बाहर ही मानते हैं जिसमें हमारे किसी अंग में रोग लगा हो-पेट में पीड़ा, कान में पीड़ा, नाक में पीड़ा, नथ में पीड़ा, पैर हाथ में दर्द आदि का नाम है व्याधि और जो मन को लग जाए, बुद्धि को लग जाए, विचारों को लग जाए, अंत:करण को दूषित कर दे उसका नाम है आधि। यह आधि और व्याधि- ये जीव को अंदर और बाहर दोनों ही दशाओं में विघटन करता है, पतन करता है, कुंठित करता है, न्यूनता डाल देता है। यह कायिक रोगों का जो परिवार है, मन नष्ट हो जाएगा। जब गुरु चरणों के धूल का कभी मस्तक पर आश्रय प्राप्त होगा यही बचाव है। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

पुण्यवान लोग जीवन भर पुण्य करते हैं और पुण्य के बल से उनको लौकिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तो यहाँ भगवान शिव का चिंतन हो रहा है-

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती।
मंजुल मंगल मोद प्रसूती।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी।
किएँ तिलक गुन गन बस करनी।

वह रज सुकृति (पुण्यवान पुरुष) रूपी शिवजी के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुंदर कल्याण और आनन्द की जननी है। भक्त के मन रूपी सुंदर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है। हे हरिभक्तों! चरणारविंद की धुली क्या है कैसी है? कहा- 'सुकृति संभु तन बिमल बिभूती' आपने जो जीवन में पुण्य किया है वह पुण्य भी श्रृंगारित नहीं है, भगवान शिव तब तक श्रृंगारित नहीं होते जब तक कि वह भस्मि लगा न देते। भूत भावन शिव अपने अंग पर जब भस्मि लिपट जाए तो शिव श्रृंगारित माने जाते हैं। ऐसे ही पुण्य आत्माओं का पुण्य जब तक गुरुदेव के चरणों की धूली से मंडित न हो तो पुण्य में जो सुकृति नाम का जो शिव है, आपके पुण्य नाम का जो शिव है वह अभी तक श्रृंगारित शिव नहीं बने जब तक कि धूली लिपट न जाए। सुकृति संभू तन विमल विभूति और मंजुल मंगल मोद प्रसूति।

यह धूली क्या-क्या कर देगी? मंजुल मंगल मोद प्रसूति तीन को जन्म देगी। मंगल से हम सब परिचित है। मंगल में कल्याण छुपा है, मोद में आनंद है और मंजुल में क्या होता है- कौतूहल। आनंद, कल्याण और सुख तीनों को जन्म देने वाली यह धूली है, तीनों को जन्म देने वाली यह ऊर्जा है। **जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी**। हे हरिभक्तों! इस धूली का आश्रय कभी हमें मिल जाय। **जन मन मंजु मुकुर मल हरनी**- बाबा तुलसी ने कहा कि हमारे अंत:करण के जो नैत्र हैं ये किसी बाहरी औषधि से स्वस्थ नहीं हो पायेंगे जब तक इस पर यह चरण धूली न लग जाए। यह इस चरण रज के अंजन से ही तृप्त होगा, इन आँखों की ज्योति बढ़ेगी। यह जो मल रूपी नैत्र हैं,

अंतर चक्षु है, प्रज्ञा चक्षु है वो आपका ज्यार्तिवान हो उनमें शक्तियों आवे इसके लिये यहाँ इस चरण धूल के लपेटे लगे, इस अंजन से वो ज्योति प्रकट होती है और भगवत कृपा से- 'किएँ तिलक गुन गन बस करनी' जिन्होंने श्रद्धा रखी, जिन्होंने तिलक धारण किया अर्थात् जिन्होंने समर्पित किया अपने आपको वो गुण गणों को वश में कर लेते हैं। वो गुणी मात्र नहीं होते हैं, गुण गणों के स्वामी बन जाते हैं। कौनसे गुण हैं जो उन्हें प्राप्त न होते हो, जो गुरु चरणाश्रित हो जाए।

हे हरि भक्तों! यह दिव्यता है। अयोध्याकांड के आरम्भ में यद्यपि वहाँ कोई अवसर नहीं रहा फिर भी चुनकर कहा-

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि।।

मैं अपनी आँखों को ठीक करना चाहता हूँ, ये आँखें ठीक तब होगी जब चरण धूली प्राप्त हो जाए। 'श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि।' अपनी आँख जब अच्छी होगी तो अच्छी बात कर पायेंगे, अपनी आँख जब अच्छी होगी तो अच्छी चीजें देख पायेंगे। अंतरमन के नैत्रों को चेतन बनाने के लिये, ज्योर्तिवान बनाने के लिये शक्तिवान बनाने के लिये इसकी आवश्यकता है।

श्री गुर पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।
दलन मोह तम सो सप्रकासू।
बड़े भाग उर आवइ जासू।

श्री गुरु महाराज के चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है तथा वह जिसके हृदय में आ जाता है, वह बड़ा भाग्यशाली होता हैं।

श्री गुरुदेव भगवान के चरणारविन्द की जो नख है, उस नखा चंद्रिका का स्मरण जब जीव करता है, तो मानिए 'सुमरित दिव्य दृष्टि हियँ होती' वह चरण नख स्मरण किये जाने से, चरण का नहीं, चरण नख की ज्योति का स्मरण जब किया जाता है तो भीतर में दिव्य दृष्टि प्रकट होती है। वह दिव्य ज्योति क्या करेगी? **दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू**- वह ज्योति जब अंतःकरण में प्रकट हो जाए तो मोह का दलन करेगी, अंधकार को नष्ट करेगी और प्रकाश को फैला देगी। हाँ जगत में वही जीव बड़भागी है जिसके हृदय में ये भाव आ जाता है।

उघरहिँ बिमल बिलोचन ही के।
मिटहिँ दोष दुख भव-रजनी के।
सूझहिँ रामचरित-मनि-मानिक।
गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक।

इस ज्योति के हृदय में आते ही हृदय के नेत्र खुल जाते हैं और संसार रूपिणी रात्रि के विकार तथा कष्ट मिट जाते हैं। तब रामचरित रूपी मणि-माणिक छिपे हुए जो जहाँ जिस खानि के हैं, ये दिखाई पड़ने लगते हैं।

अंतःकरण की आँखें खुल जाएंगी। अंतःकरण के नैत्र खुल जाएंगे। पवित्र आँखें जो अंतःकरण की है और यह संसार रात्रि है यहां हम जो विकारों में डूबे हुए हैं, सारा दोष छंट जाएगा, रात्रि मिट जाएंगी और फिर रामजी के सुन्दर चरित्र जहाँ छिपे हुए हैं वे खान में से जैसे मणि-माणक जैसे निकलने लगते हैं, ऐसे निकलने, प्रकट होने लगेंगे। जहाँ एक विशेष लाभ हुआ- यह प्रसाद क्या करेगा कि जब जीव गुरु चरण आश्रित जब इस दिव्श रज का आश्रय ग्रहण करता है तो ऐसे जीवों को श्री रामचरित सूझने लग जाते हैं। अब क्या चाहिए? यही तो सूझना था। जंजाल तो देखा दुनिया भर में पर राम चरित्र दिखने लग जाए, सूझने लग जाय रामचरित। रामचरित्र मणि

माणिक की जो गम्भीरता है, जो सूक्षमता है, इनमें जो दिव्यता है उन आंखों में चमकने लगेंगे। रामचरित मानस में मणि माणिक हैं, बहुमूल्य तत्व है वे सब आंखों में घूमने लगेंगे। कहा कैसा? कहे गुपत। जो वस्तु प्रकट है उनको तो तुम आँखों से देख ही रहे हैं आपको खुद भी दिख जाएगा प्रकट भी हो जाएंगे और खानों में छुपे हुए खनिज पदार्थ जैसे ढके पड़े हो ऐसे ही राम तत्व कहीं होगा वह भी हमें आपको राम जी की कृपा से सूझना आरंभ हो जायेगा। प्रमाण देने में कहा–

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान।।

जैसे सिद्धांजन (एक प्रकार का काजल जिसे लगाने से कहीं भी छिपी वस्तु दिख जाती है) को नेत्रों में लगाकर साधक, सिद्ध और सुजान पर्वतों, वनों और पृथ्वी के अंदर कौतुक से ही बहुत सी खानें देखते हैं1

आप जानते हैं, बहुत से योगी इन हिमालय की कंदराओं में छुपे होंगे। कई बाबा ऊपर मिलते हैं, कहते हैं 26 साल से नीचे नहीं आये। कभी कभार आते हैं फिर 6 महीने खुलने पर पलटकर ऊपर जाते हैं। कहा नहीं बाबा हम तो 26 साल से नीचे नहीं गये। उनका अनुभव है वह सब कभी–कभी प्रकाशित करते हैं और उनको संसार दिखता है।

जो सिद्ध कोटि के जीव है, जो सज्जन कोटि के जीव है, जो साधक कोटि के जीव हैं इन तीनों के लिए दवा बताई है। आम लोग लगाएं तो मना नहीं है, उनके लिए हठ नहीं है पर साधकों को तो लगाना ही चाहिए, सिद्धों को तो लगाना ही चाहिए और सज्जनों को तो यह सुअंजन लगाना ही चाहिए। इन तीनों के लिए तो यह प्रमाणिक औषधि है। यह तो लिखा हुआ है। बाकी लोग लगावे तो मना नहीं है, पर साधक, सिद्ध और सुजान को जरूर लगाना चाहिए। उनको गुरु में श्रद्धा होनी ही चाहिये। साधक सिद्ध, सुजान ये तीनों जब इस अंजन को लगाते हैं तो पहाड़ों में, कन्दराओं में, पानी में, पाताल में, आकाश में नभ में अथवा प्रकट जगत में जहाँ कहीं लीला हो रही है उन सबको वह देख लेते हैं।

सज्जनों! मानसकार तुलसी जी ने ऐसे मंगलमय चरित्रों का अपार वर्णन किया है, मानस की महिमा तो अपार गाई है। यह वंदना प्रकरण है। गुरुदेव के चरणों की वंदना करते ही उन्होंने ब्राह्मणों के चरणों की वंदना की। ब्राह्मणों की चरण की वंदना? कहा इसलिए कि जगत में अज्ञान को मिटाने का उनके पास सामर्थ्य होता है।

बंदउँ प्रथम महीसुर चरना।
मोह जनित संसय सब हरना।।

पहले धरती के देवता अर्थात ब्राह्मणों के चरणों की वंदना करता हूँ, जो मोह से उत्पन्न सभी संशयों को हरने वाले हैं। इसलिए पूज्य है महीसुर की शरण की वंदना करें। आगे कहा सज्जनों के समाज की वंदना हम करते हैं। संतों की वंदना करते हैं। साधु चरित्र की वंदना करते हैं।

साधु चरित सुभ चरित कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू।।

जिस प्रकार कपास का फल नीरस (ऊपर से आकर्षण रहित), उज्ज्वल (सफेद) और तंतुमय (गुणों से युक्त) होता है, उसी प्रकार साधु का चरित्र भी सादगीपूर्ण, स्वच्छ और सद्गुणों से भरा होता है। जिस प्रकार कपास स्वयं को ओटने, कातने और बुने जाने के कष्ट सहकर दूसरों के तन को ढंकने के लिए वस्त्र बनती है, वैसे ही साधु स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के दोषों को ढंकते हैं और समाज का कल्याण करते हैं। साधु वंदना में बताया गया है कि साधु के लिए कोई अपना या पराया नहीं होता। जैसे कपास सबको समान रूप से ढकती है, वैसे ही संत का प्रेम और करुणा सबके लिए एक समान होती है।

साधु समाज के संगम को तीर्थराज (प्रयाग) के समान माना गया है, जहाँ श्रद्धा की गंगा ....लगातार

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

...........करुणानिधान! आपको सुनकर बड़ा आनंद होगा यह पहला श्रोता ऐसा है, बापूजी इसको शिव कथा सुनाने गए तो वो बोला कथा तो बाद में सुनाना, पहले मैं तुम्हारा बालभोग करूंगा। बांधा उसको जबरदस्ती, बांधकर उसको बिठाया और फिर कथा सुनाई। जबरदस्ती श्रोता बनाया। उसको बांधकर नहीं रखे तो वो भाग जावे। मेरे भाई बहन इसलिए प्रेमी बनकर कथा सुनो कि कोई उठाना चाहें तो हम ना उठें। जिनको जबरदस्ती बिठाना पड़े कथा में वह तो पिशाच होते हैं। हम पिशाच थोड़े ही हैं। उसको जबरदस्ती बांस से बांधकर करके आसन पर बिठाया तुम्बरू ने। बैठ कैसे नहीं सुनेगा। बांस से बैठकर उसको कथा सुनने बिठाया और सब लोग कथा सुनने के लिये आ गये। और वहाँ पर तुम्बरू ने भैया शिव कथा का गान किया। हाथ में वीणा लेकर के -

पिशाचमथं तं पाशैर्बद्ध्वा समुपवेश्य च।
तुम्बुरुर्वल्लकीहस्तो जगौ गौरीपतेः कथाम्।।
आरभ्य संहितामाद्यां सप्तमीसंहितावधि।
स्पष्टं शिवपुराणं हि समाहात्म्यं समावदत्।।
श्रुत्वा शिवपुराणं तु सप्तसंहितमादरात्।
बभुवुः सुकृतार्थास्ते सर्वे श्रोतार एव हि।।
स पिशाचो महापुण्यं श्रुत्वा शिवपुराणकम्।
विधूय कलुषं सर्व जहौ पैशाचिकं वपुः।।
दिव्यरूपो बभूवाशु गौरवर्णः सितांशुकः।
सर्वालङ्घ्कारदीप्ताङ्घ्गस्त्रिनेत्रश्चन्द्रशेखरः।।

तत्पश्चात् तुम्बुरु ने उस पिशाच को पाशों से बाँधकर आसन पर बिठाया और हाथ में वीणा लेकर गौरीपति की कथा का गान आरम्भ किया। महात्म्यसहित पहली अर्थात् प्रथम संहिता से लेकर सातवीं संहिता तक शिवपुराण की कथा का उन्होंने स्पष्ट वर्णन किया। सात संहितावाले शिवपुराण का आदरपूर्वक श्रवण करके वे सभी श्रोता पूर्णतः कृतार्थ हो गये। शिव महापुराण में 7 संहिताएं हैं और 24000 श्लोक है भैया। 7 संहिताएं क्रमशः इस प्रकार हैं-

विद्येश्वर संहिता: इसमें शिव महापुराण का माहात्म्य, शिवलिंग की महिमा और पूजन विधि का वर्णन है।

रुद्र संहिता: यह सबसे विशाल संहिता है, जिसमें सती, पार्वती, कुमार (कार्तिकेय) और युद्ध खंड जैसे 5 उप-विभाग शामिल हैं।

शतरुद्र संहिता: इसमें भगवान शिव के विभिन्न अवतारों (जैसे नंदी, भैरव, हनुमान आदि) का वर्णनहै।

कोटिरुद्र संहिता: इसमें 12 ज्योतिर्लिंगों की उत्पत्ति और उनकी महिमा का विस्तार से वर्णन मिलता है।

उमा संहिता: इसमें देवी पार्वती (उमा) की महिमा और भगवान शिव के साथ उनके लीला प्रसंगों का वर्णन है।

कैलास संहिता: इसमें योग, सांख्य और ओमकार (प्रणव) के गहरे अर्थों की व्याख्या की गई है।

वायवीय संहिता: इसे वायु पुराण के रूप में भी जाना जाता है और यह दो भागों (पूर्व और उत्तर) में विभाजित है। ऐसी ये 7 संहिताएं हैं। श्रीमद्भागवत में जैसे स्कंद होते हैं ऐसे शिव महापुराण में संहिताएं हैं और इन सब में कुल 24000 श्लोक विराजमान हैं।

उस परम पुण्यमय शिवपुराण को सुनकर उस पिशाच ने अपने सारे पापों को धोकर उस पैशाचिक शरीर को त्याग दिया। शीघ्र ही उसका रूप दिव्य हो गया। अंगकान्ति गौरवर्ण की हो गयी। शरीर पर श्वेत वस्त्र तथा सब प्रकार के पुरुषोचित आभूषण उसके अंगों को उद्भासित करने लगे। वह त्रिनेत्रधारी चन्द्रशेखररूप हो गया।

दिव्यं दिव्यवपुर्भूत्वा तया स निजकान्तया।
जगौ स्वयमपि श्रीमांश्चरितं पार्वतीपतेः।।

तद्वधूमिति सन्दृष्ट्वा सर्वे देवर्षयश्च ते।
बभूवुर्विस्मिताश्चित्ते परमानन्दसंयुताः।
सुकृतार्था महेशस्य श्रुत्वा चरितमद्भुतम् ।
स्वं स्वं धाम ययुः प्रीत्या शंसन्तः शाङ्करं यशः।।
बिन्दुगः सोऽपि दिव्यात्मा सुविमानस्थितः सुखी।
स्वकान्तापार्श्वगः श्रीमांछुशुभेऽतीव खस्थितः।

इस प्रकार दिव्य देहधारी होकर श्रीमान् बिन्दुग अपनी भार्या चंचुला के साथ स्वयं भी पार्वतीपति भगवान् शिव के दिव्य चरित्र का गुणगान करने लगा। उसकी स्त्री को इस प्रकार दिव्य रूप से सुशोभित देखकर वे सभी देवता और ऋषि बड़े विस्मित हुए; उनका चित्त परमानन्द से परिपूर्ण हो गया। भगवान् महेश्वर का वह अद्भुत चरित्र सुनकर वे सभी श्रोता परम कृतार्थ हो प्रेमपूर्वक श्री शिव का यशोगान करते हुए अपने-अपने धाम को चले गये। दिव्यरूपधारी श्रीमान् बिन्दुग भी सुन्दर विमान पर अपनी प्रियतमा के पास बैठकर सुखपूर्वक आकाश में स्थित हो परम शोभा पाने लगा।

यह है शिव महापुराण का महात्म्य, करुणा निधान! इस शिव कथा का श्रवण करके वह पिशाच भी मुक्त हो गया। जो इतने समय तक मालिन कर्मो में लगा हुआ, कठिन आकृति वाला था, कुआकृति वाला था वह पिशाच भी भैया सफेद वस्त्र पहने हुए और दिव्य अंग कांति से जगमगाते हुए भगवान शिव के लोक का अधिकारी बन गया। यह शिव महापुराण का महात्म्य है। यह शिव कथा श्रवण का महत्व है।

शिव कथा सुनने की विधि क्या है? सबसे पहले तो कथा का समय निश्चित करना कब कथा हो उत्तम समय कौनसा होता है? क्या सावन, कार्तिक, सोमवार उत्तम समय हैं? सबसे उत्तम समय क्या होता है? जब हमारे मन में सुनने की प्रबल इच्छा हो और कोई सुनाने वाला भी उपस्थित हो तो वह सबसे बढ़िया समय है और हमको सुनने की इच्छा नहीं, सुनाने वाला भी ठीक-ठाक ही है तो फिर मुहूर्त क्या काम करे। श्री राम-रावण युद्ध में जीत एक की क्यों हुई? क्योंकि हनुमान दोनों के साथ नहीं थे। हनुमान एक के साथ थे। जिनके साथ गुरु कृपा है विजय उनकी ही होती है, मुहूर्त कोई भी हो।

प्रभु, सबसे पहले अच्छा समय निकले कथा की तैयारी करें और जो उत्सुक हो कथा सुनने के लिए उन्हीं को बुलाना चाहिये। कथा सुनने के लिए उत्सुक को भाई कि हमको कथा सुननी है, हमको कथा सुननी है, ऐसे भक्तों को जरूर कथा में बुलाना चाहिए। कथा में सिर्फ रिश्तेदारों को इकट्ठा करने की जरूरत नहीं है भैया। बुरा न माने कई कथा में लोग इतने रिश्तेदारों को इकट्ठे कर लेते हैं कि कथा तो सुनते ही नहीं हैं और केवल अपने रिश्तेदारों को ही निहारते रहते हैं कि चाचा जी सुन रहे हैं, फूफा जी सुन रहे हैं, मामा जी सुन रहे हैं, भाभी जी सुन रहे हैं और आप ऐसे रह गये। नहीं भैया इतनी रिश्तेदारी जमा नहीं कर लें। हमारा विरोध नहीं है रिश्तेदारों को बुलाने का लेकिन उनमें कथा सुनने की उत्सुकता होनी चाहिए, सिर्फ इंतजार ना करें कि कब कथा पूरी हो और भोजन-प्रसाद हो। कब दिन उगे और कब नाश्ता हो, ऐसा भाव श्रोताओं का नहीं होना चाहिये।

कथा में लोग मेहमान नवाजी के लोभ में न आवे, कथा के लोभ में आवे भैया। रिश्तेदार बनकर न आवे, श्रोता बनकर आवे, साधक बनकर आवे मेरे भाई बहिन। मेरी तो सलाह है, आप लोग जब कोई कथा कराओ ना तो कार्ड में यह पंक्ति लिखवाएं कि यद्यपि हम आपके उचित स्वागत सत्कार की व्यवस्था करेंगे आपके आवास, भोजन-प्रसाद प्रवास की व्यवस्था करेंगे लेकिन फिर भी हम आपके चरणों में प्रार्थना करते हैं कि आप कथा में अतिथि भाव से नहीं साधक भाव से पधारें, श्रोता भाव से पधारें। यह सूचना कार्ड में जरूर लिखें। जब आप पारिवारिक स्तर पर कथा का आयोजन करावे तो ऐसा लिखावें। नहीं तो भाई लोग तो वेडिंग मूड में आते हैं, घूमने के मूड में आते

हैं। ऐसे आते हैं लोग जैसे बेटी के व्याह में आए हो।

सूतजी महाराज कहते हैं जो कथा श्रवण के उत्सुक हैं उन लोगों को विशेष रूप से बुलाएं चाहे वे किसी देश भी में रहते हो। करुणा निधान! कथा से पहले दो काम करने चाहिए, क्या? सुनियेगा-

1. घर में जो भी फालतू सामान हो कथा से पहले वह निकाल देना चाहिए। टूटे-फूटे बर्तन पड़े हों, टूटा-फूटा सामान पड़ा हो, उसे निकाल देना चाहिये। पता नहीं क्यों शायद उससे कोई नेगेटिविटी बनती होगी इसलिए लिखा है। क्यों हटावें जी? घर में जो कुछ भी टूटा फूटा सामान है जी इसके साथ संदेश है जैसे अपने घर में से फालतू चीज हटा रहे हो ऐसे अपने दिल में से भी फालतू चीज हटाओ। भीतर के कचरे को, कबाड़ को हटाओ भैया। अगर किसी से कोई नाराजगी हो, कोई बैर हो तो उसे भी समापत कर फिर कथा करावें। हमारी कथा से पहले भीतर और बाहर सब जगह क्लियर हो जाए।

2. घर के कोने-कोने की साफ सफाई के बाद फिर सुंदर मंडप बनाओ और विवाह उत्सव जैसा उल्लास है वैसा अपने मन में उल्लास होना चाहिए है। देखो यहाँ मेरे साथियों ने कितना सुंदर मंडप सजाया बाहर द्वार तक सजावट कितनी सुंदर है। सभी के लिए गोव्रती भोजन-प्रसाद की व्यवस्था है और एक दिन यहाँ शिवजी का ब्याह भी होने वाला है बहुत धूमधाम से। गजब की बारात निकलेगी गजब की। मैं समझता हूं अहमदाबाद की धरती पर पहली बार ऐसी अद्‌भुत बरात सबको देखने को मिलेगी। बाबा का ब्याह करेंगे और क्या? करुणा निधान! देखो शिव पुराण की कथा सुननी किससे? कथा की महिमा हो गई अब वाचे कौन? कथा सुनने वाले में क्या गुण होने चाहिए? सबसे पहली बात तो कथा कहने वाला पवित्र होना चाहिए। वक्ता पूर्ण पवित्र होना चाहिए तो दूसरी बात वह दक्ष होना चाहिए। दक्ष यानि उसका हर कार्य व्यवस्थित होना चाहिये। धोती भी पहने तो व्यवस्थित तिलक हो तो व्यवस्थित, आसान हो वो भी व्यवस्थित, माला अर्पण करे तो वह भी व्यवस्थित हो। ऐसा दक्ष होना चाहिये। कभी-कभी हम देखते हैं- टेढी मालाख आसन की चद्दर लटक रही है एक साईड में। वक्ता दक्ष होना चाहिए। उसका हर काम सुव्यवस्थित होना चाहिये। उसकी पोथी व्यवस्थित, ऐसे नहीं कि कागज निकल रहे हैं। तो वक्ता पवित्र और शांत होना चाहिए। वक्ता में ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए। साधु होना चाहिये। साधु यानी प्राप्त में प्रसन्न और प्राप्त में भगवान को याद करने वाला होना चाहिये। ऐस वक्ता को कथा सुनाने के लिए कहना चाहिए।

प्रभु! करुणा निधान! कथा जब होती है तब कोई विशेष कारण है आपके जाने का तब तो जाओ, कोई बहुत जरूरी कारण है तो आप जाइए पर कोई ऐसे ही टहलने के लिए जाएं ,घूमने के लिए जाएं वह ठीक नहीं। व्यवस्था के नाते जाइए, कोई कार्य है आपका तो जाइये। आपकी कोई शारीरिक अड़चन हो, लघु शंका आदि की कोई अड़चन हो जिससे आपका ध्यान कथा में नहीं बैठ पा रहा है तो आप जरूर जाइए। बाकी मेरे-बहन न जाएं। मेरे भाई-बहन जो लिखा है वह मैं कह रहा हूँ-

ताम्बूलं भक्षयन्तो ये शृण्वन्ति हि कथामिमाम।
तच्छेंच्चर्वणं तेषां भवत्येव न संशयः।।

जो लोग (कथा के दौरान) पान (या गुटका, सुपारी आदि) चबाते हुए कथा को सुनते हैं उनके लिए वह (पुण्य के बजाय) विष्ठा (मल) चबाने के समान फल देने वाला होता है, इसमें कोई संशय (संदेह) नहीं है। किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ मुख में रखकर के कथा नहीं सुनानी और चाहिए। क्यों नहीं सुनानी चाहिए? महाराज तकलीफ क्या है, मुंह में पड़ा है पान कान में थोड़े ही है। भैया पान है तो मुँह में कान में नहीं है लेकिन अगर मुँह पान से भरा होगा तो शिव नाम कहाँ विराजमान होगा बताओ। शिव नाम को विराजित करना है इसलिए हमारी वाणी इन सब व्यसनों से रिक्त रहनी चाहिए ताकि हमारी वाणी पर शिव नाम प्रतिष्ठित हो जाए। ....शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु महाशक्तिपीठ

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा

(वेदलक्षणा गोमहिमा सत्संग से साभार)

श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ की स्थापनाः- भूमण्डल पर अलग-अलग देवी शक्तियों के शक्तिपीठ स्थापित है, लेकिन समस्त देवी शक्तियों की आधारभूता देवी माँ कामधेनु गोमाता का ब्रह्माण्ड में कोई शक्तिपीठ नहीं था। शुक्ल पक्ष की अष्टमी, कार्तिक मास, विक्रम संवत् 2076 तदनुसार दिनांक 04.11.2019 को गोपाष्टमी के समृद्ध पर्व के दिन अभिजीत मुहूर्त में श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन पथमेड़ा परिसर में श्री सर्वेश्वरी माँ राजराजेश्वरी श्री कामधेनु महाशक्ति का प्राकट्य हुआ। यह आदि शक्ति पराम्बा की अलौकिक और अपूर्व लीला समस्त विश्व ब्रह्माण्ड के ग्वालबालों, गोसेवकों, गोपालकों, गोभक्तों, गोउपासकों, गोप्रेमियों एवं गोरक्षकों द्वारा युगों-युगों से की गई तपश्चर्या तथा प्रतीक्षा का परिणाम है। धरती पर श्री कामधेनु महाशक्ति का अवतरण इस महाकल्प के इतिहास में अकल्पनीय व आश्चर्यजनक परिवर्तनकारी सिद्ध होगा।

सभी गोभक्त, गोउपासक, गोप्रेमी, गोसेवक, गोरक्षक ग्वालों को राजराजेश्वरी माँ कामधेनु महाशक्ति के दिव्य दर्शन प्रत्येक शुक्ल पक्ष की अष्टमी को प्राप्त होते रहेंगे।

श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ दर्शन का महात्म्यः- आप अखिल ब्रह्माण्ड के एकमात्र श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ में विराजमान सर्वकामनाओं को पूर्ण करने वाली महाशक्ति श्री कामधेनु पराअम्बा की शरण आए हैं। अतः जो भी शुभ मनोकामना है आपकी वह पूरी होगी। जगधात्री श्री कामधेनु महाशक्ति के पावन चरणों में पवित्र भाव से गोव्रतपूर्वक शुक्ल पक्ष की लगातार 24 अष्टमियों (लगभग 2 वर्ष) के दिन माँ की शरण में प्रत्यक्ष शरणापन्न होने का सत संकल्प करने से श्रद्धालु गोभक्त भाई बहिन की समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाती है।

गोभक्त श्रद्धालु दर्शनार्थी आरोग्य की प्राप्ति हेतु तेल का भोग, कुल की वृद्धि और रक्षा हेतु सेंधा नमक का भोग तथा श्री (लक्ष्मी) प्राप्त करने की भावना से शुद्ध गुड़ का भोग पधराने से जगतम्बा कामधेनु महाशक्ति उनकी उपरोक्त कामनाएं पूर्ण करती है।

पूज्या महाशक्ति कामधेनु गोमाता को हरा व सूखा गौग्रास एवं सवामणी गो-भण्डारा अर्पित करने से कुटुम्ब परिवार में सुख शांति तथा सर्व कामनाओं की सिद्धि का अमोघ आशीर्वाद गोभक्त श्रद्धालुओं को प्राप्त होता है।

श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ में दर्शन के नियमः-

(1) प्रत्येक महीने में शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन प्रातः 10 बजे से दोपहर सायं 2बजे तक एवं दोपहर बाद 4 बजे से रात्रि 8 बजे पर्यन्त गोभक्त श्रद्धालुओं को श्री कामधेनु महाशक्ति के दिव्य दर्शन प्राप्त होंगे। सप्तमी की संध्या को उपस्थित होना, अष्टमी के दिन प्रातः स्नान-संध्या उपरान्त निराहार रहते हुए परिसर की परिक्रमा कर श्री दत्तात्रेय कुण्ड में स्नान उपरान्त दर्शन हेतु पधारें।

(2) गोभक्त श्रद्धालु दर्शनार्थी गोधाम महातीर्थ आनंदवन पथमेडा के मुख्य द्वार से नियमानुसार अनुमति पत्र लेकर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के परिसर के नियमों का पालन करते हुए तथा परिसर परिक्रमा करते हुए कामधेनु कोटि तीर्थ सरोवर पर पहुँच कर श्री दत्तात्रेय कुण्ड में विधिपूर्वक स्नान कर भारतीय वेशभूषा धारण करके जगत जननी कामधेनु महाशक्ति के दर्शन

हेतु पैदल प्रस्थान करें। महिलाओं के लिये मारवाड़ी वेश, साड़ी आदि अनुमत वस्त्र है तथा पुरुषों के लिये बिना सिलाई किये हुए वस्त्र-धोती, पिताम्बर आदि वस्त्र अनुमत है। पुरुषों के लिये सिलाई किये हुए कोई भी वस्त्र जैसे धोती, शर्ट, अण्डरवियर, बनियान, अन्य कोई भी अंतर्वस्त्र पहनकर दर्शनार्थ प्रवेश करना निषेध है। अण्डरवियर की जगह लंगोट या कोपिन पहन सकते हैं। अंगवस्त्र से बदन पूरी तरह से ढ़का हुआ होना चाहिये। (3) श्री दत्तात्रेय कुण्ड में विधि पूर्वक स्नान ही करना है।वहाँ तैरना, अधिक समय तक जल में पड़े रहना, कपड़े धोना आदि निषेध है। (4) श्री दत्तात्रेय कुण्ड में तीन अलग-अलग घाट हैं। संत घाट पर केवल संत महापुरुष, पुरुष घाट पर गोभक्त पुरुष तथा महिला घाट पर केवल महिलायें ही अनुमत है।

(5) दर्शनार्थी श्रद्धालुगण अपनी पूर्व आंगल पोशाक पेन्ट शर्ट सहित पर्स, बेल्ट, मोबाइल, केमरा आदि भी अपने वाहन में या पूजा सामग्री वितरण केन्द्र पर रखकर कामधेनु महाशक्ति के दिव्य दर्शन हेतु पधारें।

(6) श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ में दर्शनार्थी श्रद्धालु पूजार्थ पुष्प, श्रीफल एवं गुड़ थाली अथवा कपड़े की थेली में ले जा सकते हैं।इनके अतिरिक्त कोई बाहरी सामग्री ले जाना सर्वथा निषेध है। श्री कामधेनु गोमाता की सेवार्थ कोई द्रव्य, चारा, नमक, गुड़, तेल आदि अधिक मात्रा में अर्पण करने का भाव है तो पूजा सामग्री वितरण केन्द्र पर सम्पर्क करें। श्री कामधेनु महा शक्ति पीठ में सेवा के निमित हुण्डी भी रखी हुई है।

(7) श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ में दर्शनार्थी श्रद्धालु तिलक लगाकर ही प्रवेश करें। (8) श्री कामधेनु महाशक्ति पीठ में अभक्ष्य भक्षण और पान, बीड़ी, गुटका, तम्बाकु, शराब व अन्य किसी भी प्रकार का नशा कर प्रवेश करना सर्वथा निषेध है। (9) श्री कामधेनु महाशकित पीठ में प्रवेश उपरान्त यथा संभव मौन रहें। दिव्य दर्शन उपरांत लाफसी, चना आदि उपलब्ध प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात ही प्रस्थान करें।

....संस्था समाचार का शेष भाग

गोसेवा प्रकल्प जलगाँव जिले की धरणगाँव तहसील के दहीदुले गाँव में 100 एकड़ भूमि पर बनाया जा रहा है तथा इसमें 10 हजार गोवंश सुखपूर्वक निवास करेगा। यह स्थान जलगाँव से 35 किमी की दूरी पर है।

कार्यक्रम का आयोजन श्री सिद्धि महागणपति मंदिर जलगाँव एवं श्री सिद्धि वेंकटेश देवस्थान जलगाँव द्वारा किया गया।

श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में सम्पन्न हुआ श्री राधा कृष्ण मंदिर का भूमि पूजन

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित विश्व के प्रथम गो अभयारण्य श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया (मध्य प्रदेश) में 23 मार्च को प्रातः 10.15 बजे श्री राधाकृष्ण भगवान के मंदिर निर्माण हेतु पण्डित श्री मांगीलाल जी व्यास, सरखेड़ी के आचार्यत्व में भूमि-पूजन किया गया। इस अवसर पर कथा व्यास पण्डित श्री विनोद दयाल जी चोमेला, मंदिर के मुख्य यजमान श्री लाल सिंह जी सालरिया, प्रबंध न्यासी श्री अम्बा लाल सुथार, प्रबंधक श्री पूनम सिंह, न्यासी श्री दीप सिंह जी पीपलोन सहित क्षेत्र के सैंकड़ों गोभक्त उपस्थित रहे।

भूमि पूजन समारोह के पश्चात मासिक गोमहिमा सत्संग रखा गया। कथा व्यास पण्डित श्री विनोद दयाल जी महाराज ने कहा कि मनुष्य जन्म में भाग्यशाली को ही सत्संग सुनने का अवसर मिलता है और हम कितने भाग्यशाली हैं कि हजारों गोमाताओं के मध्य बैठकर गोमाता की महिमा सुन रहे हैं।

कार्यक्रम समाप्ति पर श्री बनेसिंह पुत्र श्री लाल सिंह जी सालरिया की तरफ से सभी आगन्तुक गोभक्तों को गोव्रती प्रसादी करवाया गया।

अन्नदान-महादान लेकिन अन्न किसे कहते हैं?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

हम सभी जब भी किसी सेवाभाव वाले स्थान पर, मंदिर में, अन्न क्षेत्र में, आश्रम आदि कें प्रसादालय में भोजन प्रसाद करने जाते हैं तो एक वाक्य अवश्य लिख हुआ दिखता है- **अन्नदान महादान** या **अन्न का दान सबसे बड़ा दान है**।

इस वाक्य से हमारे मन में एक धारणा गहरी बैठ चुकी है कि यह जो मनुष्यों को भोजन करवाने में दान जा रहा है यही अन्नदान है। **अनाज** को हमने **अन्न** समझ लिया है। यह पूर्ण सत्य नहीं है, यह अर्ध सत्य है।

अन्न का अर्थ- किसी भी प्राणी के प्राणों के पोषण हेतु जो पदार्थ काम आता है वो अन्न कहलाता है। प्राणियों के जो शरीर दृष्टिगत होते हैं वे स्थूल शरीर अन्नगत शरीर हैं, ये अन्न से ही बनते हैं, अन्न से ही टिके हुए हैं। यह स्थूल शरीर चाहे मच्छर से लेकर हाथी का हो, उसे जीवित रखने के लिये जिस पदार्थ को वह आहार के रूप में ले रहा है वो अन्न कहलाता है। **''अन्नं वै प्राणाः''** अन्न ही प्राण है।

''अन्नाद्भवन्ति भूतानि'' गीता श्लोक 3/14 सम्पूर्ण प्राणी अन्न से ही उत्पन्न होते हैं। इसकी व्याख्या में परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज ने लिखा है- *प्राणों को धारण करने के लिए जो खाया जाता है वह अन्न कहलाता है। जिस प्राणी का जो खाद्य है, जिसे ग्रहण करने से उसके शरीर की उत्पत्ति, भरण और पुष्टि होती है उसे ही यहाँ अन्न नाम से कहा गया है, जैसे- मिट्टी का कीड़ा मिट्टी खाकर जीता है तो मिट्टी ही उसके लिए अन्न है। जरायुज (मनुष्य, पशु आदि) उद्भीज (वृक्ष आदि) अंडज (पक्षी, सर्प, चींटी आदि) और स्वेदज (जूं आदि) ये चारों प्रकार के प्राणी अन्न से ही उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होकर अन्न से ही जीवित रहते हैं।*

तैत्तिरीयोपनिषद् में भी एक श्लोक में कहा है- **अन्नाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। अन्नेन जातानि जीवन्ति।** अन्न से ही ये सब प्राणी पैदा होते हैं, अन्न से ही जीते हैं।

उक्त वेदवाणी और गुरुवाणी से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो गया कि केवल मनुष्य के भोजन-प्रसाद को ही अन्न नहीं कहते हैं, बल्कि प्राणीमात्र के भोजन का नाम अन्न है।

अब इस वाक्य पर आयें- अन्नदान सबसे श्रेष्ठ दान है। चूंकि अन्न प्राणीमात्र के प्राणों के लिये आवश्यक है, इसलिये इसे सबसे श्रेष्ठ दान कहा है। बहुत से भक्त कहते हैं कि हमको तो अन्नक्षेत्र हेतु देना है। हम उनके भावों का पूर्ण सम्मान करते हैं। क्योंकि गोशाला या किसी भी धार्मिक संस्था में अन्नक्षेत्र भी चलाना होता है। लेकिन इतना स्पष्ट करना चाहते हैं कि वे गोमाता को जो गोग्रास (चारा) दे रहे हैं वह भी शास्त्र सम्मत अन्नदान ही है और अन्नक्षेत्र में दिये गये दान से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। उसका कारण रामचरितमानस में सुन्दर ढ़ंग से स्पष्ट किया गया- **देत लेत सबही बिधि नीका। दानसुपात्रहि पावन टीका।।** अर्थात् लेना और देना दोनों ही तब श्रेष्ठ होते हैं जब दान सुपात्र को दिया जाय। सुपात्र को दिया गया दान ही फलदायी और पवित्र होता है।

यद्यपि कोई भी भूखा प्राणी अन्न का दान लेने का अधिकारी है, तथापि गाय के समान निर्दोष और कोई प्राणी नहीं है। इसलिये भूखों में भी गाय सबसे अधिक सुपात्र है, क्योंकि गाय सम्पूर्ण सृष्टि की पोषक है। हम कि सी भी भूखे प्राणी को अन्न देने के विरुद्ध नहीं हैं तथापि जो प्राणी सबसे अधिक हितकारी हो उसे अन्नदान प्राथमिकता से देना चाहिये।

नंदिनी

पौराणिक कथाओं के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान जो 14 रत्न निकले थे, उनमें से एक कामधेनु गो भी थीं। इन्हें देवताओं को सौंप दिया गया था। कामधेनु को समस्त गौओं की माता (सुरभि) माना जाता है। कामधेनु एक दिव्य और चमत्कारी गाय हैं। उनके नाम का अर्थ ही हैं ऐसी गाय जो मन की हर कामना (इच्छा) पूरी कर दे। कामधेनु मुख्य रूप से स्वर्ग (देवलोक) में निवास करती हैं।

नंदिनी, कामधेनु की ही पुत्री हैं। नंदिनी महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में रहती थीं। देवताओं ने महर्षि वशिष्ठ को दान कर दिया था और नंदिनी भी अपनी माँ की भांति सर्व कामना पूर्ण करती थीं। वे भी अपनी माता की तरह दिव्य शक्तियों से संपन्न थीं। महर्षि वशिष्ठ एक महान ऋषि और रघुकुल के राजगुरु थे। उन्हें अपने आश्रम में नित्य हवन, यज्ञ और देवताओं की पूजा के लिए शुद्ध दूध, घी और अन्य दिव्य सामग्रियों की निरंतर आवश्यकता होती थी। नंदिनी, जो कि कामधेनु (सुरभि) की पुत्री थी, इन सभी आवश्यकताओं को क्षण भर में पूरा करने में सक्षम थी।

ऋषि के आश्रम में अक्सर बड़ी संख्या में विद्यार्थी, तपस्वी और यहाँ तक कि राजा अपनी सेनाओं के साथ आते थे। देवताओं ने नंदिनी को वशिष्ठ जी को इसलिए दिया ताकि वे अपने तपोबल और इस दिव्य गाय की सहायता से किसी भी संख्या में आने वाले अतिथियों का उचित सत्कार और भोजन का प्रबंध कर सकें।

भगवान राम के वंशज राजा दिलीप और उनकी रानी सुदक्षिणा के कोई संतान नहीं थी। वे अपनी समस्या लेकर कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ के पास गए। वशिष्ठ जी ने बताया कि राजा आपने अनजाने में कामधेनु गाय का अपमान किया था, इसलिए उन्हें कामधेनु की पुत्री नंदिनी की सेवा करनी होगी। राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा ने 21 दिनों तक वन में नंदिनी की सेवा की। राजा साये की तरह गाय के पीछे-पीछे चलते थे और उनके विश्राम करने पर ही विश्राम करते थे।

एक दिन सेवा के दौरान एक मायावी सिंह ने नंदिनी पर हमला कर दिया। जब राजा ने सिंह को मारना चाहा, तो उनकी शक्तियाँ स्तंभित हो गई। सिंह ने कहा कि यह गाय उसका आहार है। तब राजा दिलीप ने नंदिनी को बचाने के लिए स्वयं को सिंह का भोजन बनाने का प्रस्ताव रखा।

राजा की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर नंदिनी ने अपनी माया समेट ली और उन्हें एक प्रतापी पुत्र का आशीर्वाद दिया। इसी आशीर्वाद के फलस्वरूप महाराज रघु का जन्म हुआ, जिनके नाम पर इस वंश को 'रघुवंश' कहा गया।

महाभारत में लिखा है कि एक बार 'द्यो' नामक वसु अपनी स्त्री के साथ महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर गये। वहाँ उन्हें नंदिनी पसंद आ गई। 'द्यो' की पत्नी के कहने से आठों वसुओं ने मिलकर नंदिनी को वसिष्ठ के आश्रम से चुरा लिया। जिसके कारण वसिष्ठ जी ने वसुओं को मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया। वसुओं द्वारा क्षमा मांगने पर वशिष्ठजी ने कहा कि सातों वसु जो जन्म लेते ही मुक्त हो जायेंगे लेकिन चोरी का मुख्य सूत्रधार द्यो लम्बे समय तक पृथ्वी पर रहेगा और बहुत कष्ट सहने पड़ेंगे। जन्म होने पर सातों वसुओं को उनकी माँ ने गंगा में समर्पित कर दिया और आठवे का जन्म (देवव्रत) भीष्म के रूप में हुआ।

महाभारत और रामायण में नंदिनी का वर्णन वशिष्ठ और विश्वामित्र के प्रसंग में आता है। जब राजा विश्वामित्र ने नंदिनी को बलपूर्वक ले जाने की कोशिश की, तो नंदिनी ने अपनी शक्ति से एक विशाल सेना पैदा कर दी थी, जिसने विश्वामित्र की सेना को हरा दिया था।

संक्षेप में कहें तो, कामधेनु स्वर्ग की दिव्य गोमाता हैं और नंदिनी उनकी वह पुत्री हैं जिन्होंने पृथ्वी पर ऋषियों के यज्ञ और आश्रम की सेवा की।

एक बार विश्वामित्र जब राजा थे तब किसी युद्ध से वापस आते समय से भूख प्यास से व्याकुल हो अपनी सेना के साथ वन में महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे। महर्षि ने उन सबके लिये बहुत ही स्वादिष्ट भोजन-प्रसाद बनवाया और सबको भर पेट तृप्त किया। इस पर राजा विश्वामित्र को बड़ा विस्मय हुआ कि 10 हज़ार की सेना को इन तपस्वी ने कैसे वन में रह कर भी अचानक से सबका मन पसंद भोजन खिला दिया।

उन्होंने महर्षि से प्रश्न किया तो महर्षि ने सहज भाव से नंदिनी की महिमा बता दी। इस पर विश्वामित्र को लालच जाग गया, उन्होंने कहा कि ऐसी गाय तो राजा के पास होनी चाहिए। महर्षि बोले, राजन यदि ये (नंदिनी) जाना चाहे तो आप ले जाओ।

सैनिक गए, गाय नंदिनी को जबरदस्ती खींचने लगे, नंदिनी जोर-जोर से रंभा कर रोने लगी! उसने कातर भाव से महर्षि की ओर देखा और नेत्रों में जल भर कर पूछा कि महर्षि क्या आपने मुझे त्याग दिया है। महर्षि के भी नेत्र सजल हो गए, नहीं पुत्री, कदापि नहीं। परन्तु मैं राजा और प्रजा की मर्यादा से बंधा हूँ।

नंदिनी बोली- महाराज मेरी मर्यादा तो आपकी सेवा है। क्या मैं अपने आत्म सम्मान की रक्षा कर सकती हूं? महर्षि बोले अवश्य।

तब नंदिनी ने अति भयानक रूप धारण किया और उसके नथुनों से गर्म सांस के फव्वारे छूटने लगे। उसके सींग वक्र हो कर जब वह उन विश्वामित्र की सेना पर झपटी तो कई सैनिक धूल चाट कर परलोक सिधार गए और अनेक जाकर अपने राजा के पार्श्व में छिप गए।

विश्वामित्र के जीवन का यह निर्णायक मौड़ था शायद। महर्षि वशिष्ठ से राजा ने कहा कि गाय को शांत करिए, तब वशिष्ठ को दया आ गई और नंदिनी की स्तुति की गई। वशिष्ठ जी ने कहा- हे नंदिनी! कल्याणी! तुम शांत हो जाओ। मैं राजा विश्वामित्र को शाप नहीं दे सकता क्योंकि ये मेरे अतिथि हैं और इनके पास विशाल सेना है। ऐसा कह कर उन्होंने नंदिनी की महत्ता को प्रकट किया, जिससे नंदिनी का क्रोध शांत हो गया।

तब नंदिनी ने कहा- महर्षि वशिष्ठ की वर्षो की तपस्या के फलस्वरूप इनको यह उपहार प्राप्त हुआ है जिससे ये आगे होने वाले राम अवतार के कुल के पुरोहित बनें। आप बिना तप के यह सब प्राप्त करना चाहते थे?

यह सुनकर राजा विश्वामित्र अपमान और ग्लानि से भर उठे थे। उन्हें एक बहुत बड़ी सीख मिली। उन्होंने अपनी हार के बाद यह समझा कि क्षत्रिय बल की तुलना में ब्रह्मबल श्रेष्ठत है।

राजा विश्वामित्र ने अपनी हार स्वीकार करते हुए कहा- **धिक्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्** (धिक्कार है क्षत्रिय बल को, ब्राह्मण का तप और तेज ही असली बल है)

उन्होंने अनुभव किया कि एक राजा की विशाल सेना और दिव्य अस्त्र-शस्त्र भी एक शांत ऋषि के आध्यात्मिक तपोबल और ब्रह्मदंड के सामने टिक नहीं सकते।

इस हार ने उनके राजसी अहंकार को तोड़ दिया। उन्हें समझ आया कि भौतिक शक्ति क्षणभंगुर है, जबकि आंतरिक ज्ञान और संयम अनंत शक्ति के स्रोत हैं। इसी बोध के कारण उन्होंने अपना राजपाठ त्याग दिया और कठिन तपस्या के मार्ग पर चल पड़े ताकि वे भी ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त कर सकें। उसी क्षण विश्वामित्र ने निश्चय किया और तप साधना प्रारंभ की और पहले मुनि पद प्राप्त किया और आगे चलकर ऋषि और फिर वे भी महर्षि बने।

राम अवतार में राम जी के कुल पुरोहित महर्षि वशिष्ठ थे और उनके गुरु ऋषि विश्वामित्र थे। जिन्होंने राम को दिव्य अस्त्र-शस्त्र और अनेक युद्ध विद्याओं का ज्ञान दिया।

महामहिम श्री रामनाथ कोविन्द पूर्व राष्ट्रपति का 11 मार्च को अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य में हुआ आगमन और भव्य स्वागत

गोसेवा ही सनातन और देश को आगे ले जाने का मार्ग – महामहिम श्री रामनाथ कोविन्द

अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य में आयोजित गो-आवास उद्घाटन, गो-गोपाल कॉरिडोर कार्यारंभ व श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की नवीन कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय श्री रामनाथजी कोविंद ने गोसेवा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यदि राष्ट्र को और सनातन धर्म को आगे ले जाने का कोई कार्य हो सकता है तो वह केवल गोसेवा से हो सकता है। उन्होंने कहा कि गोसेवा भारतीय संस्कृति, करुणा और प्रकृति संरक्षण की परंपरा का प्रतीक है और समाज को इसे जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए।

पूर्व राष्ट्रपति कोविंद जी ने अपने संबोधन में कहा कि आज नंदगांव आकर गोपूजन करने और यहाँ के पदाधिकारियों द्वारा दिलाए गए संकल्प के बाद वे स्वयं को भी इस पवित्र कार्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह पद की गरिमा और मर्यादा है कि राष्ट्रपति या पूर्व राष्ट्रपति किसी भी संस्था में संरक्षक, पदाधिकारी या अन्य पद स्वीकार नहीं कर सकते लेकिन वे अपने आप को इस महान कार्य के लिए पूर्ण समर्पित करके जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसी संस्था का पद निश्चित समय के लिए होता है जबकि समर्पण स्थायी और आजीवन होता है।

इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के नंदगांव पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने गोशाला में पहुँचकर विधि-विधान के साथ नंदी पूजन किया और गोशाला की परिक्रमा की। इसके बाद उन्होंने गो-गोपाल कॉरिडोर के कार्य का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गोसेवा केवल धार्मिक आस्था नहीं बल्कि समाज के आर्थिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक विकास का भी महत्वपूर्ण आधार है। गोवंश की रक्षा और संवर्धन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है।

कार्यक्रम के दौरान उन्होंने नवनिर्मित गो आवासों का उद्घाटन भी किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गोशालाओं का विकास और गोवंश के संरक्षण के लिए इस प्रकार के प्रयास समाज में सेवा और संवेदना की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने गोसेवा को सनातन संस्कृति की आधारशिला बताते हुए इसके संरक्षण और विस्तार का आह्वान किया। इस अवसर पर पूज्य महंत श्री रामप्रवेशदासजी महाराज वाराहघाट श्रीधाम वृंदावन, पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज कार्यकारी प्रधान संरक्षक पथमेड़ा न्यास, पूज्य संत श्री ऋषि चौतन्यजी महाराज पथमेड़ा, पूज्य गोसंत श्री नंदरामदासजी महाराज, पूज्य संत श्री श्री बलदेवदासजी महाराज, पूज्य श्री चेतननाथजी महाराज, पूज्य श्री सीतारामजी महाराज, पूज्य श्री महादेवानन्दजी महाराज सहित संतों का मंगल सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिंदल दिल्ली ने स्वागत उदबोधन दिया, न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह जी राजपुरोहित ने गो-गोपाल कॉरिडोर की परियोजना प्रस्तुत की। युवा गोभक्त श्री नरेन्द्र जी राजपुरोहित धानोल ने आभार व्यक्त किया एवं संचालन सीईओ श्री आलोक जी सिंहल ने किया।

कार्यक्रम में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की नवीन केंद्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण भी करवाया गया। इस दौरान उन्होंने नई कार्यकारिणी को गोसेवा, गोसंवर्धन और समाज कल्याण के कार्यों को समर्पण भाव से आगे बढ़ाने का संदेश दिया।

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति जी ने श्री गो गोपाल कॉरिडोर एवं श्री सुरभि विश्वविद्यालय परियोजना परिपत्र की प्रस्तावना का विमोचन भी किया। इसके बाद परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के साथ समन्वय कार्यालय में गो परिचर्चा की। परिचर्चा के दौरान गोसेवा के विस्तार, गोवंश संरक्षण तथा समाज में इसके महत्व को बढ़ाने के विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि गोसेवा भारतीय संस्कृति और मानवीय संवेदना का महत्वपूर्ण प्रतीक है और इसे समाज के हर वर्ग तक पहुँचाना जरूरी है।

कार्यक्रम में कई गोभक्त और गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इनमें पथमेड़ा न्यास के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिंदल, उत्तराखंड गोसेवा आयोग के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र अणथवाल, पथमेड़ा न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह शिवतलाव, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के सीईओ श्री आलोकजी सिंहल, महामंत्री श्री अर्जुनसिंह जी तिंवरी, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी गर्ग, गोसेवा महानिदेशक श्री धनराज जी चौधरी, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ब्रह्मदत्त जी पुरोहित, श्री देवाराम जी पुरोहित (कैलाश नगर), श्री श्रवण सिंह राव, श्री जसराजजी पुरोहित, श्री अम्बा लाल सुथार सम्पादक कामधेनु कल्याण, श्री विपिनजी जालान सूरत सहित कई सामाजिक और धार्मिक प्रतिनिधि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में प्रशासन की ओर से जिला कलेक्टर सिरोही श्रीमती अल्पा चौधरी और पुलिस अधीक्षक सिरोही डॉ. प्यारेलाल शिवरान भी उपस्थित रहे। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं और गोसेवा से जुड़े लोगों की उपस्थिति से पूरा वातावरण भक्ति, सेवा और उत्साह से भरा रहा।

महामहिम ने और जिला प्रशासन ने अभिनव ब्रजमण्डल परिसर के नियमों का पालन किया और डीजल-पेट्रोल के वाहनों के स्थान पर गैस और बिजली से चलने वाले वाहनों का उपयोग किया गया।

महाराष्ट्र में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के प्रथम गोसेवा प्रकल्प का हुआ भूमि पूजन

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के की प्रेरणा और सत् संकल्प से महाराष्ट्र के सबसे विशाल महाराष्ट्र में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के प्रथम गोसेवा प्रकल्प श्री पांडुरंग पथमेड़ा गोकुलम् गोशाला- जलगाँव का श्री पथमेड़ा न्यास के कार्यकारी प्रधान संरक्षक जी पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज के कर कमलों से पूज्य संतों की पावन सन्निधि तथा गोभक्तों की उपस्थिति में 13 मार्च को भूमि पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह महाराष्ट्र का विशालतम ....शेष पृष्ठ 29 पर

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

श्रद्धानुसार गोसेवार्थ सहयोग अवश्य करें।

1. एक गोमाता की सेवार्थ गोग्रास राशि प्रतिवर्ष – रु. 21,000/–
2. हरा घास – चारा की एक गाड़ी – रु. 31,000/–
3. सूखे घास की एक गाड़ी – रु. 101,000/–
4. अक्षय भू–दान प्रति एक बीघा की राशि – रु. 2,51,000/–
5. जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी
   आजीवन गोपालक बनें प्रति गोवंश – रु. 2,51,000/–
6. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी की राशि – रु. 5,00,000/–
7. गुड़ की एक गाड़ी की राशि – रु. 4,51,000/–
8. बीमार गोवंश की दवाईयां प्रतिमाह – रु.11,00,000/–
9. पथमेड़ा द्वारा सेवित गोवंश के एक दिन का
   पौष्टिक आहार, हरा एवं सूखा घास चारा – रु. 51,00,000/–
10. आप अपने निवास अथवा प्रतिठान पर नियमित गोग्रास राशि दानपात्र में अर्पित कर सकते हैं।
11. अपने परिवार में जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, उत्सव, व्रत–उपवास, पुण्यतिथि के अवसर पर सामर्थ्यानुसार सहयोग करें एवं गोमाता को अपने व्यवसाय में भागीदार बनाकर औरों को भी गोसेवा हेतु प्रेरित करें।

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
A/C: 08490100023827, BANK OF BARODA ASHRAM ROAD AHMEDABAD,
IFSC CODE: BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

7742093179, 7073000151, 9760635735

www.pathmedagodham.org Godham Mahatirth pathmeda Official

कुल पृष्ठ–36
अप्रैल 2026
प्रकाशन तिथी : 01 अप्रैल 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027